

गुरु महिमा





परम सन्त परम दयाल
पण्डित फकीरचन्द जी महाराज

॥ राधास्वामी ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वर: ।
गुरु साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

गुरु महिमा

गुरु आदि मध्य अनन्त अद्भुत अमल अगम अगोचरम् ।
विभु विरज पार अपार निर्गुन सगुन सत्य विशेशरम् ॥
जिहि मति लखे नहीं गति लखे, सो शुद्ध तत्व विचार है ।
जो चरण कमल की ओट आया, भव से बेड़ा पार है ॥
गुरु विष्णु मूरति शिव की सूरत, गुरु को ब्रह्मा जान तू ।
गुरु ब्रह्म है परब्रह्म है, यह सोच समझ के मान तू ।
कर गुरु की संगत रात दिन, नर जन्म अपना सुधार ले ।
दे फेंक माया बोझ सिर से, यम का शीश न भार ले ॥
शीश दे तन मन को दे, गुरु भक्ति रतन अमोल ले ।
राधास्वामी भेद बतायें तुझको, हिये तराजू तोल ले ॥



भूमिका

जीवन गुरु मत में व्यतीत हुआ। दाता दयाल (महर्षि शिवब्रत लाल जीं महाराज) ने पदवी देकर बड़ी दया की। इससे सच्चे गुरु मत का पता लग गया। इसका वर्णन मैंने इस पुस्तक में किया है। सन्त कबीर ने भी चार प्रकार के गुरु बताये हैं। शास्त्रों में भी चार प्रकार के गुरु हैं। सुखमणी साहब में भी चार गुरु कहे गये। आदि गुरुने नमः, जुगादि गुरुवे नमः, सतगुरुवे नमः और श्री गुरुवे नमः।

दाता दयाल के शब्द में भी यही उल्लेख है—

गुरु मध्य आदि अनन्त अद्‌भुत अमल अगम अगोचरम्।
विभु विरज पार अपार, निर्गुन सगुन सत्य विशेश्वरम्॥

जिहि मति लखे नहीं मति लखे, सो शुद्ध तत्व विचार है।
जो चरण कमल की ओट आश्रय, भव से बेड़ा पार है॥

गुरु विष्णु मूरति, शिव की सूरत, गुरु को ब्रह्मा जान तू।
गुरु ब्रह्म हैं परब्रह्म हैं, यह सोच समझ के मान तू॥

कर गुरु की संगत रात दिन, नर जन्म अपना सुधार ले।
दे फेंक माया का बोझ सिर से, जम का शीश न भार ले॥

शीश दे तन मन को दे गुरु भक्ति रतन अमोल ले।
राधास्वामी भेद बतायें तुझको, हिये तराजू तोल ले॥

यदि दूसरे सत्-पुरुषों को अपना अनुभव कहने, पन्थ चलाने सम्प्रदाय बनाने का अधिकार है तो मुझे भी अपने निज अनुभव के

आधार पर कुछ कहने का अधिकार है। इन चार गुरूओं की व्याख्या से मेरो समझ में यह आया कि असलो मजहब, धर्म और पन्थ मानवता है । ब्रह्मा गुरु शिव संकल्प, विष्णु गुरु विश्वास और आशावादी पना, शिव गुरु समस्त जगत को नाशवान समझना, पारब्रह्म गुरु अपने आत्मिक रूप में, जो प्रकाश स्वरूप है, उसमें ठहरना। संसार से पार होने के लिये पारब्रह्म देश से आगे जो निज स्वरूप है, अकाल पुरुष है, शब्द ब्रह्म है या नाम है, उसमें लय हो जाना ।

बात बहुत सरल है! इसके लिये सतगुरु का सत्संग है। मुझे दाता दयाल ने यह काम दिया। इसलिए मैंने अपने आपको अहँकार से नहीं किन्तु सच्चाई के विचार से सन्त सतगुरु के रूप में अर्थात् ज्ञान दाता के रूप में प्रगट किया और जो एक सतगुरु की ड्यूटो है और जो ड्यूटी मुझको दी। निर्बल—अबल और अज्ञानो जीवों की सहायता करना, जगत कल्याण का काम करना, जीवों को भवसागर से पार करना, वह मैं कर रहा हूँ। इस क्रम में जो कुछ मैंने समझा वह संसार को भेंट कर रहा हूँ।

—फकीर



गुरु महिमा

प्रथम सत्संग

(स्थान—झावाल, जिला होशियारपुर)

[30-11-69]

गुरु का रूप

अपनी खुशी न आये न अपयी खुशी चले ।
लाई हयात आये, कजा ले चली चले ॥

दाना पानी या कर्म का चक्र फिराता रहता है। इस कर्म के सिलसिले में कुदरत का कोई उद्देश्य होता है। संसार का जो चक्र चल रहा है। इसमें दो प्रकार के कर्म हैं— एक तो भगवान का संसार का कर्म हैं और एक हर जीव का अपना कर्म। भगवान का जो कर्म है इसमें भी कोई प्रयोजन है, कोई उद्देश्य है जो उनसे दुनियां बनाई है। हम लोग जो कर्म करते हैं इसमें हमारा भी कोई प्रयोजन है। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तेरा क्या उद्देश्य है कि तू जो सत्संग कराता फिरता है। किसी का प्रयोजन सत्संग कराने से यह होता है कि वह बहुत से चेले बनावें, पैसा आवे, डेरा धाम या मन्दिर बन जायें।

मेरा उद्देश्य क्या है? मैं सात बर्ष की आयु से मालिक को मिलना चाहता था। मेरा भाग्य या मौज सन् 1905 ई० में एक

दृश्य द्वारा दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। मैं तो था ईश्वर परमात्मा का भक्त। वहाँ से मुझे यह राधास्वामी मत या गुरु मत या कबीर मत की शिक्षा मिली। मुझे जो गुरु मत की शिक्षा मिली, इस क्रम में जो मैंने सत्संगियों से सुना या पुस्तकों में पढ़ा, वह मेरी समझ में नहीं आता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि जो कुछ उस रास्ते पर चल कर मुझे पता चलेगा, वह बता जाऊँगा। वह जो मेरी अपनी वासना थी या इच्छा थी वह मुझ से कर्म करा रही है। अब इसमें मौज क्या काम करती है? मौज ने क्यों मेरे दिमाग को फेरा मुझे समझ नहीं मगर एक एक बात समझ में आती है कि जो कुछ मैंने सन्त मत को समझा है। यदि यह संसार के अन्दर आम जनता तो नहीं, समझ-दार वर्ग की बुद्धि में बैठ जाय तो हमारा जो धार्मिक पक्षपात, धार्मिक द्वेष, अथवा हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, आदि में जो पारस्परिक द्वेष है, वह समाप्त हो सकता है।

आज लालसिंह के यहाँ आया। मुंह खाता है। आँखें शरमाती हैं। 83 वर्ष की आयु हो गई। पेशाब की तकलीफ रहती है। कौन मुसीबत सिर पर लेता है। मगर चूंकि यह व्यक्ति मानवता मन्दिर में सेवा करता रहा है। सात सौ आठ सौ रुपया प्रतिवर्ष यह मानवता मन्दिर में देता है। मानवता मन्दिर का सैक्रेटरी भी रहा हैं। इसने सेवा की हुई है इसलिए मुझे विवश आना पड़ा। आप लोगों में से डाक्टर साहब हैं जो गुरु मत में हैं। आज उनको कबीर साहब की बाणी सुनाना चाहता हूँ कि गुरु मत क्या है? अब गुरु मत दुनियाँ में फैला हुआ है। व्यास में गुरु मत, सिक्खइज्म गुरु मत, दादू पन्थी गुरु मत, पलटूपन्थी गुरु मत! कबीर आदि गुरु तथा आदि सन्त कहलाते हैं।

उनकी वाणी सुनाता हूँ—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजै साहब से हेत, परम पद पाइये॥

यह कबीर का कथन है कि सतगुरु की हाट पर जाओ। हाट कहते हैं दुकान को बाजार को। सतगुरु की दुकान पर जाओ। वहाँ से क्या सौंदा लेना है? ज्ञान, बुद्धि. समझ, विवेक और ज्ञान। इस समझ और विवेक से तुमको क्या मिलेगा? सच्चे साहब से प्रेम करने का ढंग या विधि मिलेगी ओर यह पता लगेगा कि सच्चा साहब क्या है? फिर तुमको परम पद मिल जायेगा। यही उस वाणी का अर्थ है।

जब तुम किसो दुकान पर सौदा लेने जाते हो तो उसका मूल्य देना पड़ता हैं। कोई सौदा मुफ्त नहीं मिलता। सन्तों की दुकान पर जाकर क्या मूल्य देना पड़ता है?. वह मूल्य है सतगुरु की बात को ध्यान से सुनना। जिस तरह तुस दुकान पर जाते हो, पैंसे देते हो तब ही सौदा लेते हो। पैसा नहों दोगे तो सौदा नहीं मिलेगा। यहाँ भी सौदे का मूल्य देना पड़ता है। किसी सतगुरु का बचन जो वह सत्संग में कहता है, उनको ध्यान देकर गुनना उसका मूल्य है। जो ध्यान पूर्वक सत्संग के बचन नहीं सुनते उनको कुछ नहीं मिलता क्योंकि वह उसका मूल्य नहों देते।

यही बात राधास्वामी मत की बाणी में कही गई है—

सखी आये सतगुरु आगे!
दरश न पकड़ा बचन न लागे!

कहो इस सत्संग से क्या फल पाया!
वक्त गया और जन्म गमाया !!

यही बात मैंने कही कि मूल्य देना होता है। मुफ्त सौदा नहों मिलता। तुम बचन को उसो समय पकड़ सकोगे जब तुम्हारा ध्यान वक्ता को शकल पर होगा। यदि वक्ता की ओर देखोगे नहीं, ध्यान दूसरी ओर रक्खोगे तो तुमको कुछ समझ नहीं आ सकती।

यही बात '**सार बचन**' में दूसरे शब्दों में लिखो हुई है—

दर्शन करे बचन पुनि सुने !
सुन सुन कर नित मन में गुने !!
गुन गुन काढ़ि लेय तिस सारा !
काढ़ि सार तिस करे अहारा !!

सौदा लेने वाले जब तक यह मूल्य नहीं देंगे उनको सत्संग करने का कोई लाभ नहीं।

वह सत्संग में क्या बचन कहते हैं—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजै साहब से हेतु, परम पद पाइये ॥

तुमको सत्संग कराने से पहिले मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि परम पद किसे कहते हैं। पद एक तो पाँव को कहते हैं और एक पद पदवी को कहते हैं। जैसे— डिप्टी कमिश्नर की पदवी, तहसीलदार की पदवी। पदवी में क्या होता है? किसी विशेष अधिकार, शक्ति या अवस्था की जो स्थिति है वह उस पदवी वाले को प्राप्त हो जाती है। तो सबसे बड़ी पदवी इस संसार में क्या है? संसार के सब प्रकार दुःखों से बचना, परम सुख और परम शान्ति का प्राप्त करना। इस पदवी पर बैठने का विशेष स्थान होता है। जहाँ पदाधिकारी बैठकर हुकूमत करता है। डाक्टर की भी पदवी है। जब वह अस्पताल में बैठेगा, दवायें उसके पास होंगी, तब ही वह डाक्टर की पदवी पर आयेगा। हमारे शरीर के अन्दर भी हर एक पदवी का स्थान बना हुआ है। जब तुम्हारी सुरत कामेन्द्रिय दर आती है तुम कामी हो जाते हो। इस खोपड़ी के अन्तर जिस स्थान पर बैठकर मनुष्य परम शान्ति, परम सुख, अजर अमरपने को प्राप्त करता है, वह पदवी कहाँ है? वह है चोटी का स्थान, जहाँ मनुष्य की सुरत गुरु के ज्ञान और बचनों को समझ कर अपने अन्तर में उस कुर्सी पर बैठ जाती है। जैसे तहसीलदार के लिये तहसील में बैठने के लिए स्थान बना होता है। इसी तरह

परम पद वह अवस्था है जहां हम बैठकर समस्त दुःखों को, आशाओं को, चिन्ताओं को भूल कर निजस्वरूप में आप पूर्ण होकर सुख शान्ति और आनन्द लेते हैं। उसके लिए भी स्थान है। जो तुमको नाम-दान मिला है, यह क्या है? वह इस पदवी पर पहुँचाने के लिये है मगर इस समय जितने राधास्वामी मत के लोग हैं अथवा हिन्दू-धर्म के अनुयायी हैं वह इस पदवी या पद पर नहीं जाते। अपने अन्तर उस स्थान पर नहीं जाते कि उनको वह पदवी मिल जाय। वह तो गुरु की कौली भरते हैं। गुरु ने तुमको इस परम पद के प्राप्त करने का ढंग, तरीका या भेद बताना है। अपने पद पर तुमको अपने आप जाना है।

यही राधास्वामी मत कहता है—

काल ने रक्षक कला दिखाई!

काल ने अपनी पूजा आप कराई !!

जिस शक्ति ने फकीरचन्द का रूप धर कर किसी को नदी में डूबने से बचाया, किसी के प्रश्न पत्र परीक्षा में हल कराये, किसी को अन्तर में दवा बताई, किसी को मरते समय ले गया, वह मैं तो था नहीं, फिर कौन था? वह तुम्हारा अपना ही काल रूपी मन था। यह जितने आदमी इस समय संसार में हैं जो यह कहते हैं कि हमको राम ले जाता है, कोई कहता है कृष्ण ले जाता है, कोई कहता है बाबा फकीर ने बचाया, वह बाबा फकीर या और कोई रूप कौन था? वह काल था। यही **'सार बचन'** पद्य में माया सम्वाद में है। उसमें स्वामी जी ने सबको काल और माया में रक्खा है। आप ही राम आप ही रावण, आप ही कंस और आप ही कृष्ण, आदि। आरम्भ में उस बाणी को सुनकर मैं रोने लग गया। तब दाता दयाल ने रोने का कारण पूछा। मैंने कहा— महाराज! इसकी समझ नहीं आती। यहां तो सब का ही खण्डन है। कहा इस वाणी को छोड़ दो। फिर मुझे कबीर साहब की साखियाँ और हुजूर महाराज का जीवन-चरित्र दे दिया। कहने लगे

कोई समय आयेगा जब तुमको समझ आयेगी कि यह क्या लिखा हुआ है। आज वह समय आ गया।

मैंने सत्संग आरम्भ किया था कि मैं क्यों यह काम करता हूँ। मैं अपना कर्म भोगता हूँ। सन् 1905 ई० में जब मैं सत्संग में आया था यह बाणियाँ पढ़ी थीं। दिल को चोट लगी थी। प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊँगा। अब मेरे इस काम से कुदरत को क्या मन्जूर है? जो कुछ मैं समझता हूँ वह यह है कि इस समय भारतवर्ष में मानव जाति इस काल रूपी मन के अज्ञान के कारण या सच्ची समझ और सच्चा ज्ञान न मिलने के कारण पारस्परिक घृणा द्वेष का शिकार हो रही है, उसको सच्ची बात स्पष्ट रूप से कह जाऊँ। शब्द की कड़ी है—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये !
कीजै साहब से हेतु, परम पद पाइये !!

मुझे यह ज्ञान यह बुद्धि प्राप्त नहीं होती थी। यह सच्चा ज्ञान और सच्ची बुद्धि देने को मेरे सतगुरु दाता दयाल ने मुझे गुरु पदवी दी थी। मैं इस पद पर आप लोगों की दया से पहुँचा। इसलिए मैं तुम सत्संगियों को सत्-गुरु मानता हूँ। दया तो मेरे गुरु की हैं अथवा बाबा सावन सिंह जी महाराज की है जिन्होंने मुझे यह काम करने को उत्साहित किया और मैं इस काम से परम पद को पा गया।

कोई आदमी सहस्रदल कँवल में अभ्यास करता है, कोई त्रिकुटी में, कोई भंवर गुफा में, कोई सत लोक में। यह जितनी श्रेणियाँ है हमारे अन्तर, यह पदवी हैं या केन्द्र हैं। जो जिस स्थान पर अभ्यास करता है वह उस स्थान के पद का मालिक हो जाता है। जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता है, किसी को दवा बताता है किसी की सुरत चढ़ाता है। कहीं अफ्रीका व अमरीका में प्रकट होता है, तो चूंकि मैं नहीं होता तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा

कि वह हर आदमी का अपना ही मन होता हैं, उसका अपना ही आत्मा होता है। राधास्वामी मत में इस मन का नाम काल रक्खा हुआ है।

भारत वर्ष में धार्मिक रूप से लोग आपस में बंटे हुए हैं। इसका परिणाम भारत का बंटवारा, पन्जाबी सूबा का बनना, पारस्परिक झगड़े, धार्मिक भेदभाव और द्वेष। इसलिये मैं यह समझता हूँ कि कर्म तो मैं अपना भोग रहा हूँ। मगर शायद इस मेरे कर्म के भोगने में कुदरत का हाथ रहा हो। मेरे विचार यदि भारतवर्ष में फैल जाय तो हो सकता है कि मानव जाति का जो धार्मिक घृणा द्वेष है यह समाप्त हो सके या कम हो सके।

अब परम पद क्या है? मैंने बताया कि सहस्त्रदल कंवल या सहस्त्राकार अर्थात् जो हमारा मन अनेक प्रकार के विचार उठाता रहता है वह परम पद नहीं है। त्रिकुटी में त्रिकुटी वाद है— ध्याता, ध्यान और ध्येय। यह भी परम पद नहीं है। सुन्न और महा सुन्न में द्वैत है। अद्वैत मन का है। यह भी परम पद नहीं है। भँवर गुफा में हमारा अपना-अपना अकेला आत्मा रहता है। बहुत ऊन्ची अवस्था है मगर यह भी परम पद नहीं है। सहस्त्राकार, ओंकार, राररकार, सोहंकार और सत्याकार से परे परमपद है जो अकाल पुरुष, अनामी पुरुष, परम तत्व, सच्चा साहब सबका आधार है। हम या हमारी जो सुरत है वहाँ से यहाँ आई हुई है। जब तक हम सतगुरु से विवेक और ज्ञान लेकर अपने अन्तर में सहस्त्राकार, ओंकार, रारंकार, सोहकार और सत्याकार से आगे जायेंगे, हम परमपद को या सच्चे स'हब को प्रेम नहीं कर सकते। इसलिए सन्तों के मार्ग में गुरु नानक ने सच्चे साहब को अकाल पुरुष कहा है। कबीर ने अनामी पुरुष कहा है। राधास्वामी मत ने भी अनाम कहा है जिसको राधास्वामी कहते हैं। हिन्दू शास्त्रों में परम तत्व, आधार, कूटस्थ कहा है। वहाँ तुम कब जाओगे? किसी सतगुरु की दुकान पर जाकर पहिले सौदा खरीदो। क्या सौदा लेना है? सच्ची समझ, सच्चा विवेक, जिस तरह तुम दुकान पर जाते हो, पैसे देकर सामान—दाल, चावल, हल्दी, मिर्च आदि मोल लेते हो। यदि

सामान खरीद कर उन दाल चावलों को पकाओ नहीं, उसमें मिर्च मसाले न डालो तो तुमको उस सौदे को लेने का कोई लाभ नहीं है। तुम्हारा पेट नहीं भर सकता। इसी प्रकार सत्संग में जाकर सच्ची बुद्धि और सच्चा ज्ञान तो प्राप्त कर लिया मगर उसको तुमने मनन नहीं किया अथवा प्रयोग नहीं किया तो उस परम पद को कैसे पाओगे? बाहर के गुरु ने तुमको सच्चा ज्ञान, सच्ची बुद्धि, सच्चा विवेक देना है। तुमने जो कुछ उस बुद्धि के अनुसार समझा है उसके अनुसार अपने जीवन को क्रियात्मक (अमली) बनाना है। यदि तुम नही बनाते तो जैसा ही सौदा मोल लिया या न लिया।

सतगुरु सब कुछ दीन्ह, देत कछु न रह्यो !
हम ही अभागिन नारि, सुख तज दुःख लह्यो !!

सतगुरु ने सब कुछ दिया। जीने का राज़ या रहस्य बताया कि दुनियां में कैसे जीओ, क्या करो ओर तुमको अपना जीवन कैसे व्यतीत करना है? तथा किस बुद्धि और विवेक के साथ तुमने अपना जीवन चलाना है? गुरु ने तो कोई कमी नहीं छोड़ी मगर तुम ही अभागिन हो जो तुमने बात सुनी, समझी, जो सौदा तुम लाये उस पर तुमने अमल नहीं किया। जैसा कि मैंने कहा कि दुकान से सौदा ले आये मगर उसको पकाया नहीं। फिर क्या लाभ?

तुम सब लोग भूले हुए हो। तुमने गुरु मत को काल मत बनाया हुआ है। तुम उस आदमी को सतगुरु मानते हो जिसका रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट होता है या दर्शन देता है। मैंने तुमको सिद्ध कर दिया कि जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रगट होता है वह तुम्हारे मन का रूप है। सतगुरु का रूप नहीं है। सतगुरु का रूप है ज्ञान, सच्ची बुद्धि, सच्चा विवेक। गुरु गोविन्दसिंह की वाणी है—

आतम ज्ञान गुरु उपदेशे !

तो गुरु का रूप है ज्ञान, समझ, विवेक।



द्वितीय सत्संग

[स्थान ग्रावाल ता० 1-12-69]

गुरु ब्रह्मा (शिव संकल्प)

कल कबीर साहब के इस शब्द से सत्संग शुरू किया था—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये !

जिस प्रकार से आजकल के सत्संगी केवल गुरु की देह के साथ ही चिपटे हुए हैं, देह से ही प्रेम करना चाहते हैं। ऐसे ही मैं भी दाता दयाल जी की देह से प्रेम किया करता था। जो कुछ वह कहा करते थे उन वचनों को समझने की ओर मेरा ध्यान नहीं जाता था। मेरा तो एक भावुक प्रेम था। अज्ञानी जीवों की आरम्भ में सबकी ऐसी ही दशा होती है। जैसे— छोटा बच्चा है, वह मां से ही प्रेम करना जानता है। उसमें इतनी शक्ति नहीं है कि माँ जो कुछ कहती है उसको समझ सके। यह प्रथम कोटि है। ऐसा सबके साथ होता है। किसी के वश की बात नहीं है। समय पर जब बच्चे को समझ आ जाती है तब वह माँ की बात को समझने के योग्य होता है। ऐसे ही मैं भी था। कबीर का भी यही कथन है कि सतगुरु के पास से ज्ञान और बुद्धि लो। मुझे यह ज्ञान और बुद्धि प्राप्त नहीं होती थी। मेरा केवल प्रेम दाता दयाल के साथ था।

वह ज्ञान देने के लिए मुझ से कहा करते थे—

कहना सुनना सब है निष्फल, मान बात एक मेरी।
एक बात जो मेरी माने, सौ सौ सनूंगा तेरी॥

कोटि ग्रन्थ पढ़ कर क्या पाया, गुरुगम ज्ञान न सूझा।
एक सैन से अनुभव जागे, गुरुमत जिसने बूझा ॥

नहिं वह कर्म धर्म जप तप है, नहिं वह साँख्य का ज्ञाना।
नहिं वह संयम नियम है प्यारे, नहिं वेदान्त का ध्याना ॥
वाद बिवाद है दण्त कहानी, बात का बने बतंगड़ा।
शब्द जाल में जो कोई जकड़ा, बुद्धि टाँग का लंगड़ा ॥
कान इधर ला कहदूं तुझसे, कर गुरु का सत्संगा।
राधास्वामी की कृपा से, मन नहिं उपजे शंका ॥

यह काम जो मुझको दिया था गुरुयायी का, यह सत्संग के सार को समझने के लिए मुझे सौंपा गया था। जब बात मेरी समझ में नहीं आती थी तो उनसे अत्यन्त प्रेम किया करता था। जैसे— बच्चा मां के साथ प्रेम करता है। मुझको समझ देने के लिए यह गुरुयायी का काम दिया था। इस कर्म से मुझको समझ आ गई। यह दुनिया क्या है? काल और माया का खेल है। ब्रह्माण्डी मन का इस दुनियाँ में खेल है। हमारे अन्दर जितना हमारा मन का खेल है यह सब काल और माया का खेल है। मैं इससे निकल नहीं सकता था।

एक शब्द में लिखते हैं—

अब के चूके मौज न ऐसी, त्याग काल की आशा।

एक जगह और लिखते हैं—

कर सत्संग विवेक के साथ!
तेरे शीश रहे गुरु हाथ !!

यदि किसी गुरु ने अपना हाथ किसी के सिर पर रख दिया तो वह तब तक इस काल और माया से नहीं निकलेगा जब तक वह सत्संग के वचनों को नहीं समझेगा तथा असलियत को नहीं समझेगा। मैं ऐसा सत्संग कराता हूँ कि जो जीव सचमुच सच्चे साहब से हेत करना चाहते हैं और परम पद को प्राप्त करना चाहते

उनको सच्चा विवेक दे जाऊँ और असली रहस्य बता जाऊँ। सत्गुरु जो होता है वह किसी से निज स्वार्थ के लिए काम नहीं कराता। जो कुछ कहता है उसके कल्याण के लिए कहता है। यही दशा मेरी थी। मुझे जो भी यह सत्संग कराने का काम या नाम दान देने का काम दिया था वह मेरे ह' कल्याण के लिए दिया था। वह कल्याण कैसे हुआ वह बताता हूं -

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजे साहब से हेत, परम पद पाइये !!

मैं मालिक से मिलने के लिए आया था। अब मुझे सच्चा ज्ञान हो गया। सच्ची समझ आ गई। मुझे मालिक का पता लग गया कि वह कहां रहता है और वह क्या है? केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता, मुझे अपने घर का पता लग गया। जब मुझ को यह समझ आई कि तू लोगों के अभ्यास में सुरत चढ़ाने तो जाता नहीं, लोगों को डूबने से बचाने, बीमारों को दवा बताने जाता नहीं, फिर वह कौन है? वह है हमारी अपनी ही आत्मा, अपना ही मन। जिस प्रकार की जिसको आस है, विश्वास है उसके अनुसार उसका जीवन बनता है। देखो! मीराबाई थी उसको यह विश्वास था कि ठाकुरों का प्रसाद अमृत होता है मगर जब उसको विष दिया गया और उसको बता दिया गया तब भी इस विश्वास के कारण कि ठाकुर का प्रसाद अमृत होता है उस विष ने उस पर प्रभाव नहीं किया।

यदि दुनियाँ वालों को इस दुनियाँ में रहने का गुरु मिल जाय तो उन लोगों का जीवन अच्छा हो सकता है। हम गृहस्थी हैं। **यदि हम सदा आशावादी रहें कि जो भगवान् करता है अच्छा करता है, जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, जो कुछ होगा अच्छा होगा अथवा यह विश्वास हमको आ जाय कि भगवान् जो कुछ करता है हमारे लिए अच्छा करता है, जो कुछ उसने किया अच्छा किया, जो कुछ हमारे साथ**

होगा अच्छा होगा, तो इस विश्वास से वह दुःख भी सुख प्रतीत होगा '

मेरा एक लड़का चल बसा। 14 वर्ष का था। मेरा एक डेढ़ सेर खून बढ़ गया। मेरी स्त्री हमेशा सत्संगियों को यह उलाहना देती रहती कि मेरा तो पुत्र मर गया तुम्हारे गुरु के चेहरे पर लाली आ गई। वह लाली क्यों आई ? मैं गरीब आदमी था। मेरी हक हलाल की कमाई थी। ईमानदारी का जीवन मैंने काटा। जब कभी अकेला होता सोचा करता कि अब रिटायर होने वाला हूँ। पैसा पास नहीं। बुढ़ापे की सन्तान थी। इनको कौन पढ़ायेगा लिखायेगा ? कैसे गुजारा करूँगा ? यह शिकायत मैंने दाता दयाल (महर्षि शिव) से भी की थी। उन्होंने कहा था कि तुमको मालिक पर विश्वास नहीं। वह जो करेगा तुम्हारे लिए अच्छा करेगा। जब लड़का मर गया तो मुझको बजाय रोने व दुःखी होने के खुशी हुई। क्योंकि मैंने सोचा कि मालिक ने जो किया मेरे लिए अच्छा किया। मेंरे सिर से एक जिम्मेदारी समाप्त हो गई। एक लड़की 9 वर्ष की क्वारी मर गई। मैं लायलपुर में कोर्स पास कर रहा था। जब बगदाद से वापिस आया तो दस सेर का बस्ता मेरे साथ था। रास्ते में चिट्ठी मिली जिसमें लिखा था कि **'शब्द प्यारी' (पुत्री)** मर गई। तुम सच मानना ! मैंने बस्ता रख कर दोनों घुटने जमीन पर टेक कर दाता दयाल को धन्यवाद दिया। उसके विवाह को कहाँ से पैसा लाता ? चूंकि मुझको यह विश्वास था कि भगवान् जो करता है अच्छा करता है। लड़के और लड़की की मृत्यु मेरे लिए दुःख के बजाय सुख का कारण बन गई। ब्याही हुई लड़की मर गई। खुशी हुई। क्यों ? क्योंकि मैं था गरीब। यद्यपि दामाद सत्संगी घराने का था, मगर वह लड़की को तंग किया करता था। मुझे भी तंग किया करता था। रेडियो नहीं दिया, साईकिल नहीं दी, अमुक चीज नहीं दी। मैं देता कहाँ से ? लड़की के मर जाने से मुझे बजाय दुःख के सुख हुआ। तुम गृहस्थी हो। यदि सत्संग में बैठकर तुमको सच्ची बुद्धि मिल जाय तो तुम्हारी हाय हाय जो सुबह

से शाम तक करते रहते हो, यह समाप्त हो जाय। मैंने और ढंग से कहा है। सिक्खों के गुरु घराने ने और ढंग से कहा है। वर्णन शैलो का ही अन्तर है।

उन्होंने भो कहा—

तेरा भाना मिट्ठा लागे।
जो करिहे सो भला ॥

यदि तुम लोग यह लोग यह विश्वास कर लो कि मालिक जो करता है तुम्हारे लिये अच्छा ही करता है तो इस विश्वास के कारण संसार में जो कुछ भी तुम्हारे लिये होगा उससे सुख ही मिलेगा।

मैं तुमको नाम नहीं जपवाता। धन्य गुरु, धन्य गुरु नहीं कहलवाता। मैं गुरुमत के भेद को प्रगट करता हूँ। शब्द की कड़ी है—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि पाइये।

तो सत्संग से विवेक मिलता है, ज्ञान मिलता है। यही सुखमणी साहब की दूसरी अष्टपदो में लिखा है—

सतपुरुष जिन विवेकिया, सतगुरु तिस का नाम।
ताके संग शिष्य ऊतरे नानक हरि गुन जान ॥

अर्थात् जिस व्यक्ति ने सत्पुरुष को जान लिया है उसका नाम सत्गुरु है। उसकी संगत से, उसकी सेवा से तुमको सत्पूरुष की प्राप्ती होगी।

उसी सुखमणी साहब में लिखा है कि सत्पुरुष किसे कहते है—

जिभ्या एक अस्तुति अनेक।
सत्पुरुष है पूर्ण विवेक ॥

सच्ची समझ और सच्चे ज्ञान का प्राप्त करना ही सतपद में जाना है। हिन्दू शास्त्र भी यही कहते हैं कि बिना ज्ञान के मुक्ति

नहीं। मोक्ष किसे कहते हैं ? हमारा मन किसी ख्याल में फँस जाना है। वह बन्धन है। उस ख्याल से स्वतन्त्र हो जाने का नाम मुक्ति है, हम गृहस्थी हैं। हमको अनेक प्रकार के बन्धन हैं। इन बन्धनों से निकालना किसका काम है ? किसी सतगुरु का। हम को कैसे निकालेगा ? सच्ची समझ देकर सच्चा विबेक और सच्चा भेद देकर निकालेगा।

स्वामी जी का कथन है—

बन्धे तुम गाढ़े बन्धन आन ।।

पहिला धन्धना पड़ा देह का, दूसरे त्रिया जान।
तीसर बन्धन पुत्र विचारो, चौथा नाती मान ।।

नाती के भी नाती होवे, फिर कहो कौन ठिकान।
धन सम्पत्ति और हाट हवेली,
यह बन्धन क्या करूँ बखान ।।
चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी,
बांध लिया अब बहु विधि तान।
कैसे छूटन होय तुम्हारा, गहरे खूँटे गढ़े निदान ।।

मरे बिना तुम छूटो नाहीं,
जीते जी तुम सुनो न कान।
जगत लाज और कुल मर्यादा,
यह बन्धन सब ऊपर ठान ।।
लीक पुरानी कभी न छोड़ो,
जो छोड़ो तो जग की हानि।
क्या क्या कहूँ विपत्ति में तुम्हरी,
भटकों जोनो भूत मसान ।।

तुम तो जगत सत्य कर पकड़ा,
क्यों कर पाओ नाम निशान ।
बेड़ी तोक हथकड़ी बांधे,
काल कोठरी कष्ट समान ॥
काल दुष्ट तुम बहु बिधि बांधा,
तुम खुश होके रहो गलतान ।
ऐसे मूरख दुःख सुख जाना,
क्या कहूं अजब सुजान ॥
शर्म करो कुछ लज्जा ठानो,
नहिं जमपुर का भोगो डान ।
राधास्वामी शरण गहो अब,
तो कुछ पाओ उनसे दान ॥

गुरु क्या दान देता है ? क्या कोई फूंक मारकर देता है या कोई वस्तु संकल्प करके तुमको देता है ? नहीं, गुरु ने तुमको सच्चा विवेक और सच्चा ज्ञान बताना है ।

यही कबीर कहते हैं—

चलो सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये ।
कीजै साहब से हेतु, परम पद पाइये ॥

हम साहब से हेत क्यों करें, यह एक प्रश्न होता है ? इसलिए कि जिस संसार में हम आये हैं यह तो काल और माया का है । जब तक हमारी सुरत इस दुनियाँ के खेलों को सत मान रही है तब तक हम बन्धन में है । इस सृष्टि में बहुत कम लोगों को संसार से वैराग होता है । किसी के पुत्र मर जाते हैं, वह समझते हैं दुनियाँ कुछ नहीं मगर जो असली संसार हैं उसको तो कोई छोड़ता नहीं !

मुझ से संसार नहीं छूटता था। इस संसार से छुड़ाने को दाता ने यह काम दिया था। इस संसार से मुझे छुड़ाया सत्संगियों ने। कैसे ? जब लोगों ने आकर कहा कि बाबा ! तू हमारे अन्दर आया, मरते समय ले गया मगर मैं तो होता नहीं था तो मुझको यह विश्वास हो गया कि जो कुछ भी मनुष्य के अन्दर पैदा होता है वह सब उसका ही विश्वास है, उसका अपना ही मन है। उसके अपने ही मन का खेल है।

यह गोपालदास बैठा हुआ है। अमृतसर में बीमार हुआ। इसने कहा कि रात को स्वप्न में मैं प्रगट हुआ। कोई दवा बताई कि यह खा लो ठीक हो जाओगे। यह डाक्टर के पास गया कि बाबा ने अमुक गोली बताई है। उसने कहा कि यह दवा होती है। उसने खाई और ठीक हो गया। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तूने उसे दवा बताई थी। नहीं ! फिर वह रक्षा करने वाला कौन था ? यह उसका अपना ही मन था। यही तुम्हारा काल है। तुम को इस बात का पता नहीं है। यह समझकर कि बाबा फकीर आया, उसने मुझको दवाई बता दी तो बाबा बड़ो करनी वाला है। बड़ा पहुँचा हुआ है और मैं उसको अन्धेरे में रख कर इससे सेवा लेता हूँ तो मैं अपराधी हूँ। यही है काल और माया का चक्र मगर यहाँ तक तुम लोग पहुँच नहीं सकते। यह लालसिंह है। मालिक ने इसको भाग्यवान बना दिया। यदि यह इस ख्याल से मेरी सेवा करे, रुपया दे कि बाबा ने फूंक मार दी है इससे उसका सब कुछ बन गया और मैं इस ख्याल से लेता हूँ और इसको सच्चा ज्ञान सच्ची समझ नहीं देता तो वह मेरा रुपया लिया हुआ मुझको नष्ट कर देगा, क्योंकि मैंने तो इसको कुछ दिया नहीं। दिया तो केवल यह दिया कि इसके ख्याल को बदल दिया।

दयाल धाम में यह अमरसिंह मेरे पास गया था। वहाँ 15-20 दिन रहा। वह उस समय अमृतसर में किसी कारखाने में 70, 80 रुपया पर नौकर था। मैं चूंकि विचार के रहस्य व इस काल की रचना के नियम को जानता हूँ। मुझको ज्ञान है कि सृष्टि कैसे बनती है ? यह ख्याल या संकल्प की दुनियां है। मैंने इसके

ख्याल को बदल कर इन दोनों भाइयों में आपस में प्रेम रख कर, इकट्ठा होकर काम करने का आदेश दिया। इससे इनको सफलता मिल गई। चूंकि यह संकल्प का जगत है इसलिए दुनियादारों के लिए मेरी शिक्षा यह है कि घरेलू शान्ति रक्खो। तुम में एकता रहनी चाहिए। एक और एक ग्यारह। उच्च शिक्षा या अध्यात्म तो उनके लिए है जो सदा के लिये इस चक्र से निकलना चाहते हैं। गृहस्थियों के लिये यह शिक्षा है— जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी तुम्हारी मति, वैसी तुम्हारी गति जैसी तुम्हारी करनी, वैसी तुम्हारी भरनी।

यह ख्याल का तथा आशा का जगत है। यदि तुम अपने मन को साफ शुद्ध रक्खोगे, अपने घरों में सास बहू, दयोरानी जिठानी, बाप बेटा, भाई भाई आदि प्रेम रक्खोगे तो तुम्हारे घर में कमी किसी बात की नहीं रहेगी। यह है बुद्धि और ज्ञान जो कबीर कहता है—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये।

यह माया का देश है। मनोमय जगत है। इस माया देश में रहते हुए सच्ची बुद्धि और सच्चा ज्ञान क्या है? प्रेम। यदि भाई भाई में सच्चा प्रेम है तो वह सब कुछ उसके लिए त्याग करने को तत्पर हो जावेगा।

इस भवसागर से पार होने की विधि या मार्ग और है तथा इस संसार में सुखपूर्मक जीवन व्यतीत करने का मार्ग है शिव संकल्पमस्तु। यह वेद-मार्ग है। अच्छे विचार रखना। जब तक दोनों भाइयों का आपस में प्रेम रहेगा, इनके अन्दर एक दूसरे के विरुद्ध द्वेष पैदा नहीं होगा, नौनिद्धि और बारह सिद्ध इनके घर के आगे रक्षा करती रहेंगी। जिस समय दिल में कोई कपट आ जायगा, यह लक्ष्मी वहाँ से कूच कर जायेगी। इसलिए आपस में नीयत साफ रक्खो, और प्रेम रक्खो।

कल एक बुढ्ढा जिसके दो लड़के हैं। चिट्ठी लिखा के मेरे पास ले आया। अब दोनों में नहीं बनती। बुढ्ढे का कभी एक लड़के से द्वेष फिर उससे प्यार। फिर दूसरे से प्रेम! भूखे मरते हैं। मैं आया झाबाल। तुम लोगों ने सत्संग के लिए बुलाया था। मैंने कहा कि मैं क्यों आया? अपना कर्म भोगता हूँ। कर्म तो मैं अपना भोग्रता हूँ। मगर यदि तुम लोगों को मेरी बात सुनकर कुछ लाभ पहुँच जाय तो अहोभाग्य! तुम्हारी निर्धनता क्यो है? सुदामा कृष्ण का सखा था। दोनों इकट्ठे गुरु के दरबार में पढ़ा करते थे। जब लकड़ो काटने जाने लगे तो गुरु की स्त्री ने भुने हुए चने सुदामा को दे दिए कि जब भूख लगे तो दोनों भाई बाँट कर खा लेना। जंगल में रात हो गई। रात को वृक्षों की टहनी पर ही बैठ हुए थे। सुदामा अकेला ही चने चबा गया। कृष्ण ने पूछा— क्या खाता है? सुदामा ने कहा कि कुछ नहों, सर्दी से दान्त बजते हैं। वह जीवन भर कंगाल रहा। उसका कृष्ण के साथ प्रेम था। उसकी स्त्री पतिव्रता थी। इसलिए दिन फिर गये। सुदामा के कर्म से दिन नहीं फिरे। घरों में तुम लोग व स्त्रियाँ रहते हो। वहां सास बहू से चोरो, दयौरानी जिठानी से चोरी, भाई भाई से चोरी करते हैं। अपना लड़का आया उसको मिठाई दे दी। भाई का लड़का आया उससे छुपा रक्खा। यह जो हमारा कर्म है यह हमारी निर्धनता का कारण है।

मेरा अपना घर है। अपना मुँह काला करके कहता हूँ। हम, मेरा ताऊ और उसकी सन्तान इकट्ठे रहते थे। मैं नौकर था। मेरा पिता भी नौकर था। उस सयय तो पता नहीं था, अब मुझे याद है कि जब मैं अकेला होता तो मेरी माँ एक बादाम चोरी से दे देती। कहती— बच्चा! खा ले। किसी को बताना मत। ऐसे ही मेरी ताई अपने बच्चों के साथ करती होगी। जब तक यह दशा रही, घर में कुछ नहीं बना। ऐसे ही यदि तुम लोग रहते हो तो यह अच्छा है कि भाई भाई अलग हो जाओ बजाय इसके कि तुम अपनी सन्तान के लिए बीच में से देते रहो या खाते रहो। लालसिंह!

अमरसिंह ! जब तक घर इकट्ठा है कोई वस्तु दूसरे भाई से छुपा कर अपने बच्चों को मत दो।

ऊपर के शब्द में जो साहब से हेत का उल्लेख है वह बड़ा ऊञ्चा है। उसके तो तुम लोग अधिकारी नहीं। तुम को जो कुछ मुझे सत्संगों में कहना है उनमें तुम्हारी दुनियां भी, दीन भी और परमार्थ भी सब कुछ कह जाऊंगा। सच्चा बुद्धि, सच्चा विवेक तुम को दे जाना चाहता हूँ। तुम परीक्षा कर देखो। जिसकी नीयत साफ है उसको जेब भारी है। मैं सिपाही का लड़का हूँ। मेरा बाप बारह रुपया वेतन ले के रिटायर हुआ। मैंने इस सिद्धान्त का पालन किया। मैंने देखा कि स्त्रियाँ घर में मेर तेर करती हैं। चाहे माँ हो या मौसी। ताई माँ अपनो ओर खींचतो रहती है ? मन में कुढ़तो हैं। घर में हेरा फेरी करती हैं। मेर तेर है। लड़को और बहू में भेद समझती हैं। उसी समय रामनारायन को लिख दिया कि आज से हम तुम अलग। तुम अपनी रोटी आप कमा कर खाओ। तुम अपनी खाते रहो। बह अपनी खाते रहे। पाप तो नहीं। व्यापार साथ रखते हो। बेईमानी करते हो। तुम्हारा घर है। बहू आ जाती है, तुम लड़की का अधिक पक्ष करती हो। तुम्हारे घर में बरकत कहाँ से आयेगी ? सिद्धान्त के अनुसार तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि तुम बहू और लड़कियों को एक बराबर समझो। चूंकि तूम नहीं समझते तुम्हारी लड़कियाँ आगे जाकर दु:ख भोगती हैं और बहुयें भी दू:खी रहती हैं। यह है सच्चा ज्ञान और सच्चा रहस्य जो मैं तुम गृहस्थियों को देना चाहता हूँ। केवल राम राम जपने से तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता। समाधि लगाने से तुम्हारा जोवन सुख से नहीं गुजर सकता। तुम्हारा जीवन तो सुख से तब गुजरेगा जब तुम अपने जीवन में सच्चे विवेक और सच्चे को ज्ञान को समझकर उसके अनुसार चलोगे।

सुनो डाक्टर साहब ! तुमको हुजूर बाबा सावनसिंह जी ने नाम देने और सत्संग कराने की आज्ञा दी थी। वही आज्ञा मैं तुमको देता हूँ। इस क्षेत्र में सत्संग कराओ। लोगों को जीवन ब्यतीत करने का रास्ता बताओ। सब लोग तो चौथे पद में नहीं जा सकते।

दुनियां को तो दुनियां की आवश्यकतायें हैं। इसके लिए है वेदमार्ग-शिव संकल्पमस्तु। अच्छे विचार, अच्छे भाव, प्रेम का मार्ग, जिस घर में शान्ति नहीं है वहां कभी कुछ नहीं। जिस घर में लड़ाई हो तो अच्छा है कि आदमी अलग हो जाय।

मैंने उस मालिक से मिलने के लिये जीवन बिता दिया। मेरी समझ में यह आया है कि वह मालिक पूर्ण रूपेण यहाँ नहीं रहता। वह तो पिण्ड, अण्ड और ब्रह्माण्ड से न्यारा है। यही राधास्वामी मत को बाणी है। आजकल के राधास्वामी मतवाले मेरे नाम से चिढ़ते हैं। मैं कहता हूँ चिढ़ो। तुम धन्य हो। किसी सत्पुरुष से प्रम करो, यदि नहीं कर सकते तो उसके साथ शत्रुता करो। तुम्हारा कल्याण हो जायेगा। इस डाक्टर ने प्रत्यक्ष में तो मेरे साथ शत्रुता नहीं की मगर मन में द्वेष तो रक्खा था। मन से द्वेष रखने का यह परिणाम हुआ कि अब यह असलियत को समझ गया। वह मालिक अनामी, अकाल पुरुष तो पूर्ण रूपेण यहाँ नहीं रहता, जिस तरह सूर्य यहाँ नहीं रहता। सूर्य की किरणें रहती हैं। यदि सूर्य सारा यहाँ आ जाये हम सब अग्नि हो जायें। यदि वह अकाल पुरुष पूर्ण रूप से यहाँ आ जाये तो यहाँ कुछ भी न रहे। एक अकाल पुरुष रह जाय। यदि कोई उस अकाल पुरुष की पूजा करना चाहता है तो कैसे करें? ईश्वर की भक्ति या मालिक की भक्ति क्या है? उसकी अँश सुरत है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर है। वह अँश रूप या सुरत उस अकाल पुरुष से, या सतलोक से जीवों में आई है, अतः मनुष्य मनुष्य की सेवा करे। मनुष्य मनुष्य के साथ प्रेम करे, उसका हित करे। अब तुम सम्पूर्ण जगत के साथ तो हित नहीं कर सकते। तो जो आदमी तुम्हारे सम्बन्धी कुटुम्बी, भाई बहिन आदि हैं। जिनको भगवान् ने तुम्हारे साथ लगाया है उनसे सच्चा प्रेम करना सीखो। यही उस मालिक की सच्ची भक्ति है। मन्दिर में भक्ति करने से तुमको एक मन का आनन्द मिलेगा। इन्सान इन्सान के काम आये। सबसे पहिले अपने घर वालों से प्रेम और उनकी सेवा करो। हृदय को खुला (निष्कपट) रक्खो। मैं उस चिट्ठी लाने वाले

बुड्ढे से कहना चाहता हूँ कि जो कुछ तूने जीवन में सोचा वह तेरे सामने आ रहा है। जो तेरे लड़कों ने सोचा वह उनके सामने आ रहा है।

उस शब्द की कड़ी है—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजे साहब से हेत, परम पद पाइये॥

कहते हैं कि साहब (मालिक) से हेत करो। ज्ञान बुद्धि लो। ज्ञान और बुद्धि के या गुरु का एक रूप नहीं है। ज्ञान बुद्धि क्या है? गुरु के चार रूप हैं— आदि गुरु, जुगादि गुरु, सतगुरु, श्री गुरु।

हिन्दू शास्त्र कहते हैं—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

कबीर साहब का एक शब्द है—

दूर गवन तरो हंसा हो, घर अगम अपार।
चार गुरु मिल थापिल हो, जग के हैं कढ़ियार॥

चार गुरु क्या हैं? चार प्रकार के ज्ञान हैं। एक ज्ञान तो ब्रह्मा का है। गुरु ब्रह्मा— तुमने सृष्टि कैसे पैदा करनी है। सन्तान कैसे पैदा करनो है? गुरु विष्णु—दुनियाँ में किस प्रकार जीवित रहना है? गुरु महेश्वर—इस दुनियाँ से अलग कैसे होना है? गुरु पारब्रह्म—वह हमारा असली घर शब्द और प्रकाश है। यह चार गुरु हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग अच्छी सन्तान पैदा करो और घरों में शान्ति रक्खो। घर की पार शान्ति से पड़ेगी। पैसे से नहीं पड़ेगी। पैसा तो कुन्जड़ों के भी बहुत होता है।



तृतीय सत्संग

(स्थान—टाँडा जि० होशियारपुर)

[1-12-70]

पहिले मैंने ग्राम झावाल में दो सत्संग कबीर के शब्द पर दिये है। यहाँ भीं उसी शब्द पर सत्संग कराऊँगा।

वह कबीर साहब का शब्द यह है—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजे साहब से हेत, परम पद पाइये॥

वह कहते हैं कि सतगुरु के पास से ज्ञान और बुद्धि मिलती है, उस मालिक का जो सच्चा साहिब है पता लगता है और परम पद मिलता है। वह मालिक जिसका मुझे पता लगा वह कहाँ है? उसका पता मुझे नहीं लगता था। साधन अभ्यास करता था। जब मेरी समझ में नहीं आता था, तो अपने सतगुरु को अपने प्रेम से तंग किया करता था।

गुरु मोहि अपना रूप दिखाओ
यह तो रूप मोहि प्यारा लगे, याही से वाको दर्शाओ!

इसके दर्शाने के लिए मेरे सतगुरु ने मुझको यह काम दिया था। कहा कि नाम दान दिया कर, सत्संग कराया कर। तुझको राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। अब वह हो गये। कैसे हुए? केवल इस एक ख्याल ने कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होता है, मरते समय ले जाता है, दवायें बताता है मगर

में नहीं होता। मैं असत्य नहीं कह रहा। लोग कहते हैं कि सन्त अपने आपको छिपाते हैं। कोई छुपाते होंगे। इससे मुझ मालिक के रूप का क्या पता लगा? यही कि मेरे अन्दर जितने दृश्य-- सहस्त्र-दल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न तथा भंवर गुफा के आते थे, बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, साधु तथा महात्मा अपने अन्तर देखता था, तो मेरे मन में ख्याल आया कि जब उनके अन्तर मैं नहीं जाता तो मेरे अन्तर भी जो मैं समझता था कि बाहर के दाता दयाल या स्वामी जी या राम या कोई और रूप भी वास्तविक होते नहीं थे। वह मेरे ही मन का श्रद्धा विश्वास था। फिर उस असली मालिक को ढूंढने के लिए विवश हो गया। प्रकाश और शब्द में गया। वह जो प्रकाश मेरे अन्तर होता है या शब्द सुनता हूँ उस प्रकाश को देखने वाली कोई और वस्तु है। शब्द को सुनने वाली मेरे अन्तर कोई और वस्तु है मैं तुमको देख रहा हूँ। तुम और हो और मैं और हूँ। तो उसके साधन में लगा रहता हूँ।

फिर मालिक क्या निकाला? जहाँ न रूप है, न रंग है, न शब्द है न प्रकाश है। उसको सन्त या गुरु नानक साहब कहते हैं अकाल पुरुष। स्वामी जी कहते हैं अनामी पुरुष। वह जो अवस्था है वह मालिक है।

यही कबीर अपनी वाणी में बताते हैं कि वह मालिक क्या है—

दूर गवन तेरा हंसा हो, घर अगम अपार।
नहिं वहां काया नहिं वहां माया,
नहिं वहां त्रिगुन पसार।
चार बरण उहवां हैं नाहीं,
नाहीं कल व्यवहार॥
नौं छः चौदह विद्या नाहीं,
नहीं वहँ वेद विचार।
जप तप सञ्जम तीरथ नाहीं,
नाहीं नेम अचार॥

पाञ्च तत्त नहिं उत्पत्ति भइ लें,
सो परलय के पार ।
तीन देवता तेतिस कोटी,
नाहिं दसों अवतार ॥
सोलह संख के आगे होई,
समरथ का दरबार ।
सेत सिंहासन आसन बैठे,
जहाँ शब्द झनकार ॥
पुरुष रूप कहा बरनौं महिमा,
तिन गति अपरम्पार ।
कोटि भानु की सोभा जिन्ह के,
इक इक रोम उजार ॥
क्षर अक्षर दोनों से न्यारा, सोई नाम हमार ।
सार सबद को लेइके आयो, मिरतू लोक मझार ॥
चार गुरु मिल थापिल हो, जग के हैं कड़ियार ॥
उन कर बहियां पकड़ रहो हो, हँसा उतरो पार ।
जम्बू दीप के तुम सब हँसा, गहिलो सबद हमार !
दास कबीरा अब की दीहल निर्गुन के टकसार !!

कबीर का कथन है कि असली मालिक तो वह है। चार गुरु इस संसार में हर मत में कहे गये हैं जो जीवों को इस भवसागर में खुश रहने, व सुखी रहने का साधन बताते हैं और इस अवस्था को पार करने का ढंग बताते हैं।

हिन्दू शास्त्र भी चार गुरु बताते हैं—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वर: ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

मैंने संत्सग शुरू किया था—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये !
कीजे साहब से हेत, परम पद पाइये !!

साहब से मिलने का ढंग तो यह है जो बताया गया कि पिण्ड, अण्ड, ब्रह्माण्ड से परे जाओ मगर उसकी अधिकारी तो सब दुनियां नहीं हैं। तुम तो दुनियाँ चाहते हो। दुनिया में सुख चाहते हो। हमारे घरों के दुखड़े हैं। इनके लिए सतगुरु क्या कहता है ?

सतगुरु के मैंने चार रूप बताये हैं। जीवों के लिए चार गुरु संसार में नियत किये गये हैं। अर्थात् चार को हिदायत या शिक्षायें। गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का। चार प्रकार को समझ, चार प्रकार का विवेक, चार प्रकार के तरीके। यह बताये हैं जीवन यात्रा को सुख और शान्ति और आनन्दमय रखकर अपने घर जाने के लिए। प्रथम गुरु ब्रह्मा है। ब्रह्मा उत्पत्ति करता है। हम इस दुनियाँ में आते हैं यदि हमको ब्रह्मा गुरु का पता नहीं तो हमारी उत्पत्ति करना दु:ख का कारण बन जाती है।

गुरुब्रह्मा— वह क्या कहता है? यही कि जो तुम उत्पत्ति करते हो, तुम्हारे अन्तर से संकल्प उठते हैं, यदि यह ठीक हैं तो इस संसार की तुम्हारी स्थूल रचना और मन की रचना ठीक होगी। यदि तुम्हारे विचार बुरे हैं, सच्ची समझ नहीं है, सच्चा विवेक नहीं है और तुम रचना करते हो तो तुम्हारे लिए दु:ख का कारण बन जायगी।

तुम सन्तान पैदा करते हो किन्तु तुम उससे दु:खी हो जाते हो। कितने गृहस्थी हैं जो कहते हैं कि हम सन्तान से सुखी हैं ?

घर घर देखा एक ही लेखा।
क्या पण्डित क्या काज़ी शेखा ॥

क्यों दु:खी है ? क्योंकि सन्तान के उत्पन्न करने का हमको ज्ञान नहीं है।

तुम गृहस्थी हो। मेरे पास सब लोग अपने निज घर जाने के लिए तो नहीं आते। घर के दु.खों से दु:खी होकर सब मेरे पास आते हैं। तुम सन्तान जो पैदा करते हो उसके पैदा करने का ढंग तुमको ज्ञात नहीं है। अभिमन्यु की कथा तो तुमने सुनी होगी। जब वह माँ के पेट में था तो अर्जुन ने अपनी स्त्री को चक्रव्यूह बेधने का वर्णन किया था। तो अभिमन्यु ने उसका संस्कार लिया। जब युद्ध के समय चक्रव्यूह बेधने का प्रश्न पैदा हुआ तो उसने कहा था चक व्यूह बेधने की विद्या मैं जानता हूँ। हमारे बच्चे जब माँ के पेट में होते हैं तो जिस प्रकार के विचार माँ के होते है वही विचार बच्चे में आते हैं। यह मैं थ्योरी (कल्पना) नहीं कह रहा किन्तु जीवन का अनुभव बता रहा हूँ।

मैं जब दूसरी कक्षा में पढ़ता था तो मैंने चोरी की। एक लड़के की कलम दवात चुरा लाया। अब मैं सोचता हूँ कि दूसरी कक्षा के लड़के को किसने कहा कि चोरी कर। अभिमन्यु को चक्रव्यूह बेधना किसने सिखाया ? विचारों ने सिखाया। उस समय माँ के जो विचार थे उनका प्रभाव पड़ा क्योंकि मेरी माँ चोरी किया करती थी। मैं मातृ भक्त था। वह मुझ से प्रेम से कहा करती थी— फकीर दासा ! (मुझे) तेरे बाप को स्टेशन पर रात के पहरे पर पैसे मिला करते थे। वह पैसे लाया करते थे। मैं तेरे बाप की जेब से पैसे निकाल लिया करती थी। उनको जमा करती रहती थी। एक बार जब उनको कष्ट हुआ तो चालीस रुपया जमा किये हुये उनको दे दिये। वह साँसारिक दृष्टि से चोरी नहीं है मगर सदाचार की दृष्टिकोण से चोरी हैं। वही प्रभाव मुझ पर पड़ा। यह में तुमको जिन्दा उदाहरण दे रहा हूँ। वैसे तो हिन्दु नारियों की इस विषय पर बहुत सी गाथायें हैं।

तुम लोग शिकायत करते हो कि हमारी सन्तान हमारा कहना नहीं मानती। हमारे वश में नहीं है। क्यों वश (काबू) में नहीं है ? क्योंकि जब तुम स्त्री के पास गये थे तो बच्चा पैदा करने के विचार

से नहीं गये थे। जब बेजब्तगी या बेबसी की दशा में तुमने बच्चा पैदा किया तो वह बाजब्त (वशवर्त्ती) कैसे हो सकता है। मैं जो कुछ तुमको कह रहा हूँ यह मेरे क्रियात्मक जीवन के अनुभव हैं।

अब दूसरो उदाहरण सुनो। मेरी एक लड़की सुरती है। जब मैं इस धार्मिक उन्मत्तता में था तो मैं यह चाहता था कि मेरी सन्तान ऐसी हो जो न कामी हो, न क्रोधी हो, न लोभी, न मोही और न अहंकारी। वह लड़की हो गई। उसका विवाह भी मैंने किया। वह वहाँ नहीं रही क्योंकि अर्ध उन्मत्त है। जिस विचार से मैंने पैदा की वैसी सन्तान मेरे सामने आई।

माताओ! बहनो! तुम भी सत्संग में आई हो। तुम सब जब तक सत्संग के वचनों को ध्यानपूर्वक सुनोगे नहीं, सोचोगे नहीं, तुमको सत्संग से कोई लाभ नहीं होगा।

स्वामी जी की बाणी है—

सब ही आये सतगुरु आगे !
बरस न पकड़ा बचन न लागे !!
कहो अस सत्संग से क्या फल पाया !
वक्त गया और जन्म गमाया !!

मेरी बुढ़ापे की उम्र है। कुदरत ने मुझको कुत्ता बनाया है। यह कर्म हैं, जिस तरह कुत्ते को टुकड़ा पड़ता है, वही मेरी दशा है। कभी शास्त्री ने चाय पिला दी। कभी लालसिंह ने रोटी खिला दी। कभी जगतराम ने खिला दी। मैं इस कर्म से दुःखी हूँ।

मेरी एक लड़की है। बड़े अफसर की स्त्री है। पढ़ी लिखी है। जब कभी उसकी माँ उसको बात कहती वह उसका कहना नहीं मानती थी। विरोध करती थी। मेरी स्त्री प्रायः कहा करती थी कि दूसरे लोगों को मति देते हो लड़की को क्यों नहीं देते ? मैं उससे कहा करता था। मेरा मुंह काला कर और अपना कर। लड़की का कोई दोष नहीं है। एक दिन मैंने लड़की से पूछा कि तेरी माँ तेरी

शिकायत करती है। क्या बात है? उसने कहा पिता जी। पता नहीं क्या बात है? क्या आपने मेरी कोई और शिकायत सुनी है? मगर जब माँ मुझ से कुछ कह देती है तो मुझ से रहा नहीं जाता। मैं रोती हूँ पछताती हूँ मगर मेरे वश की बात नही है।

ऐ संसार के प्राणियों! मैं यह सत्संग दर्द दिल से करा रहा हूँ ताकि गुरु ऋण से उत्तीर्ण हो जाऊँ। बात क्या थी? मेरे सन्तान थी। मुझे सन्तान की आवश्यकता नहीं थी मगर काम की लपेट में आ गया। लड़की पेट में आ गई। मुझे याद है कि पहिले महिने मेरी स्त्री ने कहा था कि पीपल की जड़ ला दो ताकि बच्चा चला जाय। जिस बच्चे को पेट में आने पर माँ नहीं चाहती वह बच्चा माँ का कहना कैसे मानेगा? यह घरेलू जीवन के लिए अनुभूत नुसखे आपको बताये हैं। इन पर चलो ओर सन्तान की दृष्टि से योग्य सन्तान पैदा करो।

सत्संग का शब्द था—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये।

मैं तुम लोगों को क्या देता हूँ? सच्ची बुद्धि देता हूँ, सच्चा ज्ञान देता हूँ जिससे तुम्हारा घरेलू जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत हो जाय। जो बोया हुआ है वह काटना पड़ेगा। जब बच्चा पेट में है तो जिन विचारों को लेकर या रख कर तुम सन्तान पैदा करते हो उसका प्रभाव बच्चे पर अवश्य होगा। बच्चे के पेट में रहते हुए तुम सास से, दयौरानी जिठानी से तथा पति से लड़ती झगड़ती रहती हो। तुम यदि यह आशा करो कि पैदा होने वाला बच्चा झगड़ा नहीं करेगा तो यह नहीं हो सकता। बच्चा पेट में होता है, उस समय जिस प्रकार का भोजन, जिस प्रकार के विचार स्त्री रखती है वह संस्कार बच्चे पर पड़ते हैं।

इसलिए आदेश है कि गर्भवती स्त्री जो खाने को चाहती हो, उसकी इच्छा को पूरा करना आवश्यक है। ऐसा सत्संग मैंने तीन वर्ष हुए सहारनपुर में दिया था। वहाँ एक आदमी मुझको मिला। उसने कहा पण्डित जी! जो कुछ आपने कहा बिल्कुल सच कहा।

उसने कहा कि मेरे घर के पास एक सेठ रहते हैं। उनका एक लड़का है । यह दो-ढाई वर्ष से बीमार था । दो सिविल सर्जन उसको दवा कर रहे थे। ठीक नहीं होता था । एक कोई गृहस्थी साधु गाँव में रहता था। मैं उसे जानता था। मैंने कहा उसके पास ले जाओ। वह लोग लड़के को उसके पास ले गए। वह साधु उसको आध घण्टे तक देखता रहा। कहा कि इसको लोबिया के पकौड़े बनाकर खिलाओ, यह ठीक हो जायगा । ऐसा ही किया गया और वह बच्चा ठीक हो गया। जब डाक्टरों को पता लगा कि बच्चा ठीक हो गया, उनका सारा एम० बी० बी० एस० पना मिट्टी हो गया। वह उस गृहस्थी साधु के पास गये । उन्होंने कहा कि आपने क्या इलाज किया है ? साधु ने कहा— 'कुछ नहीं' । पूछा क्या रोग था ? उसने कहा कि मेरे ख्याल में यह आया कि जब बच्चा मां के पेट में था, वह लोबिया खाना चाहती थी। उसको मिला नहीं। यह कमो लड़के में थो। उसके कारण वह बीमार हुआ। तुम गृहस्थी हो, दु:खी हो क्योंकि तुम गुरु ब्रह्मा का जो नियम है उसको भूल गये। इसका ज्ञान नहीं।

हमारे लड़के लड़कियां ऐब करते हैं। कितने हो लड़के विगड़ जाते हैं। क्यों ? क्योंकि बच्चा माँ के पेट में रहते हुए माँ बाप के संस्कार को ले लेता है जैसा कि अभिमन्यु के उदाहरण में बताया गया है। तो जब बच्चे स्त्रियों के पेट में होते हैं और वह कामातुर हो कर भोग करतो हैं तो बच्चा काम भोग के संस्कार को अवश्य लेगा। वह समय से पहिले कामी हो जायेगा । हमारे दु:खों का कारण यही है कि जो पुरानी सभ्यता थी उसको हम भूल गये ।

धन्य गुरु धन्य गुरु कहने से तुम्हारा कल्याण नहीं हो सकता। यदि तुम्हारे मन में परमार्थ की आकांक्षा है तो हो सकता है कि परमार्थ दृष्टि से ज्ञान मिल जाय और दुनिनाँ के सुख-दु:खों की परवाह न करो। फिर शायद कुछ शान्ति मिल जाय।

अच्छा ! अब जो बीत गया, वह बीत गया। अब क्या करो ? तुम्हारा खट्टे का पौधा लगा हुआ है। तुम उस पौधे को बदलना

चाहते हो। तुम उसके लिए क्या करते हो? तुम उसको किसी मिट्ठे के पौध का पैबन्द लगा देते हो। पैबन्द लगाने में टहनियों को काट कर दोनों टहनियों को ऐसे जोड़ देते हो और ऊपर से कपड़ा बांध कर ऐसे जकड़ देते हो कि एक का रस दूसरे में चला जाय। यही गुरु मत है जो हिन्दुओं में 8-10 वर्ष के बच्चे को, जो गुरु धारण करता था, दिया जाता था। वह क्या था? वह पैबन्द लगाना था, जब गुरु और शिष्य में प्रेम होता हैं उनके मन आपस में मिल जाते हैं, इसका नाम है गुरु धारण करना अथवा नाम दान लेना।

चूंकि आजकल नाम देने वाला स्वयं क्रियात्मक नहीं, उसकी अपनी रहना ठीक नहीं, तो उस गुरु के कारण शिष्य का जीवन बदल नही सकता।

आजकल गुरु मत एक भेड़ चाल है। जब तक गुरु और शिष्य में परस्पर हित नहीं है, प्रम नहीं है, दोनों के मन आपस में मिले हुए नहीं हैं जिस तरह कि दो टहनीयों को एक दूसरे से जोड़ देते हैं तब तक एक का प्रभाव दूसरे में नहीं जा सकता। यह गुरु मत की प्रणाली आज से नहीं है किन्तु आदि काल से चली आती है। आठ नौ वर्ष के बच्चे को यज्ञोपवीत या नाम दान दिया जाता था। हिन्दू शास्त्रों में इस तरह 16 संस्कार ऋषियों ने बताये हैं। गर्भाधान विधि, नाम करण संस्कार, मुण्डन संस्कार आदि। यहां तक कि मरते समय भी संस्कार होता है। यह मेरा संस्कार ही नाम-दान है। तुम लोग सत्संग में आये हो। अपने बच्चों का किसी ऐसे पुरुष के साथ सम्बन्ध जोड़ो जो स्वयं नेक और पवित्र आत्मा हो। स्वयं अपने आपको क्रोध मोह पर कण्ट्रोल रखने वाला हो। यह है पैबन्द लगाना। इसलिए कहा जाता है कि सतपुरुषों के साथ प्रेम करो। यह आवश्यक नहीं कि तुम उसको गुरु मानो। अभिप्राय तो तुम्हारे आपस में प्रेम करना है यह बात बावा सावन सिंह कहा करते थे। ऐ भाई! तुम मुझे चाचा, भाई समझ लो। मैं कहता हूं कि यदि कुछ नहीं बनता तो उसको शत्रु समझ लो। रावण ने राम से शत्रुता की थी। यह डाक्टर साहब जो मुझे यहाँ बुला कर लाये हैं मुझ

से घृणा किया करते थे क्योंकि उनकी आंखों पर पन्थ के पक्षपात का चश्मा चढ़ा हुआ था। आज यह मेरे पीछे फिरते हैं।

आज का सत्संग शुरू किया था—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाइये !

वह जो साहब से हेत है उसका संकेत मैंने पहले कर दिया है। तुम दुनियादार हो तुमको बताता हूँ कि तुम्हारा जीवन घर में सुखी रखने का क्या गुरु है? पहिले गुरु ब्रह्मा, फिर गुरु विष्णु ! विष्णु पालन करते हैं। जो विचार तुम्हारे अन्तर में उठते हैं यदि वह आशावादी (**Optimistic**) हैं विश्वासमय हैं तो वह तुम्हारे आशावादी संकल्प. तुम्हारे विश्वास युक्त विचार तुम्हारे गृहस्थ जीवन को बदल देंगे, जिस तरह मीराबाई को विश्वास था कि ठाकुरों का प्रशाद अमृत होता है। उसको विष दिया गया था। उसने उस पर प्रभाव नहीं किया। मेरे जीवन के अनुभव हैं 'विश्वासम् फल दायकम्'। विश्वास ही दुनियाँ में गुरु विष्णु है। एक उदाहरण भी सुनाता हूँ—

एक सेठ मोती लाल इन्दौर वाले की स्त्री बाँझ थी। जिस स्त्री को मासिक धर्म नहीं होता उसको बाँझ कहते हैं। पचास वर्ष की हो गई थी। मोती लाल 55 वर्ष का था। सन्तान नहीं थी। मैं इन्दौर गया हुआ था। उनका मुझ पर विश्वास बैठ गया। वह मेरे पास से प्रशाद ले गई। देखो उसका विश्वास कैसा था? वह डाक्टर के पास गई तो उसने कहा कि तेरे सन्तान नहीं होगी। उसने कहा कि मैं बाबा से प्रशाद लाई हूँ। मेरे लड़का होगा। उसके यहाँ बच्चा हुआ। उसका नाम मैंने श्री भगवान रक्खा। अब मेरी लड़की है जिसके विवाह को 14 वर्ष हो गये। मैंने कई बार उसको प्रशाद दिया, उसको कुछ नहीं हुआ क्योंकि वह मुझको अपना बाप समझती है। उसका पूर्ण विश्वास नहीं है।

तो गुरु विष्णु क्या है? विश्वास। कभी निराशावादी मत बनो। यह विश्वास रक्खो कि मालिक जो करेगा, तुम्हारे लिए अच्छा करेगा। हारी बात कभी मत सोचो। हाय! यह न हो जाय, हाय!

वह न हो जाय। ऐसा बिचार मन में न लाओ। देखो! कहीं पांव पर चोट लगी हो, तो जहां चोट लगी हो, वहीं चोट दुबारा लगती है। क्यों? क्योंकि तुम्हारे मन में यह डर रहता है कि कहीं फिर न लग जाय।

तुमने क्या करना है? तुम हमेशा आशावादी रहो। मैं नहीं कहता कि मुझ पर विश्वास करो। किसी एक जगह विश्वास रक्खो। यदि सनातनी हो तो राम, कृष्ण, शिव, हनुमान आदि किसी पर विश्वास रक्खो मगर एक पर रक्खो। जिस मनुष्य के मन में विश्वास होता है उसका बेड़ा पार हो जाता है—

कहा है—

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जांय!

गुरु पर विश्वास हो। गुरु की दया तो यह है कि वह तुमको ज्ञान बुद्धि और देता है। और जो कुछ तुमको मिलता है वह तुम्हारे विश्वास का फल मिलता है। मैं निर्भय होकर कहे जाता हूँ कि जो एक राम पर विश्वास रखता है उसका भी काम बिश्वास के कारण हो जाता है। जो हजरत मुहम्मद पर बिश्वास रखता है उसका भी काम हो जाता है। यह तो तुम्हारे विश्वास पर निर्भर है मगर **'एक पर विश्वास रक्खो'। 'विश्वासम् फल दायकम्'**। कितने ही आदमी मुझ पर बिश्वास रखते हैं। मेरा रूप उनकी सहायता करता है और मुझे कोई पता नहीं होता। यह लाल सिंह बैठा हुआ है। इसने एक घटना सुनाई। यह कहीं गया हुआ था। जब रात को सो गया तो 12 बजे दैत्य आ गये। उसको डराया, धमकाया। यह कहता है बाबा जी! मैं तुमको याद करता रहा। आप 10-15 मिनट बाद आये। आपने उसको मार-मार कर भगा दिया।

यह तुम्हारे सामने बैठा हुआ है। सामने का उदाहरण देता हूँ। यह कहता है बाबा जी! आपने देर लगाई। मैंने कहा—भई! तू मुझको होशियारपुर में समझता था। वहाँ से आने में देर लगती है।

अब मैं तो गया नहीं। कौन गया? इसका अपना ही विश्वास था। मैं यह स्पष्ट वर्णन क्यों करता हूँ क्योंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है।

मेरे सतगुरु का मेरे लिए शब्द हैं—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुःखी जीव को अङ्ग लगा कर, ले जा गुरु के देशा॥
तेरा रूप है अद्‌भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही॥

में जो बचन कहता हूँ मेरा यही नाम दान है। यदि तुम्हारे लोगों के अन्दर बाबा फकीर का रूप प्रगट हो गया या कोई और गुरु प्रगट हो गया, तो तुम इस विचार से कि वह आता है लुट गये। अपना पैसा लाकर इनके सामने रख दिया। ऐ इन्सान! यह जितना खेल हैं तेरे अपने विश्वास का खेल है। यह मैं क्यों कहता हूँ? यह मेरा अनुभव है पुस्तकीय ज्ञान नहीं।

कबीर का कथन है—

मेरा तेरा मनुआ कैसे एक होय रे।
तू कहता है पुस्तक लेखी, मैं कहता हूँ आंखों देखी॥

मैं गया सिकदराबाद। वहाँ एक करोड़पति सेठ बुरुगू महादेव है। बारह वर्ष से बीमार था। चूँकि वह क्षेत्र राधास्वामी मत का है, उसके लड़के राधास्वामी मत वालों की सहायता करते रहते हैं। वह मुझको कहने लगे बाबा जी! वह बीमार हैं। चलो। मैं चला गया। वह बीमार पड़े हुए थे। मच्छरदानी के डण्डे चान्दा के लगे थे। वह कहते हैं कि क्या मेरे कर्म कट नहीं सकते? मैंने कहा कौन काटे? कहते हैं कि साधु महात्मा काट सकते हैं। मैंने कहा यदि विश्वास हो तब साधु महात्मा काट सकते हैं। बोला मुझको आप पर विश्वास है। मैंने कहा फिर कुछ दान करोगे। उसने सोचा शायद मैं रुपया माँगता हूँ। उसने लड़कों को देखा। उन्होंने कहा

जो 'हाँ'। जो माँगोगे हम देंगे। संकल्प कराने को पण्डित को बुलाया गया। मैंने पण्डित से कहा कि सेठ साहब दान देते हैं संकल्प मन्त्र पढ़ दीजिए। उसने कहा क्या दान देते हैं? मैंने सेठ जी से कहा कि जितने तुम्हारे पिछले जन्म के बुरे कर्म हैं उन सबका फल मुझको दे दो और यह विश्वास कर लो कि तुम्हारा कोई पाप नहीं रहा। पण्डित ने मन्त्र पढ़ कर पानी छोड़ा। मैं पी गया। उसने विश्वास कर लिया कि मैंने सारे पाप दे दिये। वह ठीक हो गया। तुमको मुझको या तुम्हारे व मेरे जीवन के साथ जो बीतता है वह तुम्हारे मेरे कर्म हैं। तुम्हारे अपने विश्वास हैं। जैसी आशा वैसी वासा। जैसी करनी वैसी भरनी। जैसी गति वैसी मति।

तो गुरु विष्णु का क्या अर्थ है? यही कि हमेशा आशावादी होकर जीओ। आशावादी वही हो सकता है जिसमें विश्वास हो। यह तुम्हारी इच्छा है कि तुम सगुन रूप पर विश्वास रक्खो या निर्गुन रूप रक्खो अथवा उससे परे जो मालिक है उस पर रक्खो।

इस ज्ञान बुद्धि लेने के लिये फीस देनी पडती हैं। तुम बाजार से सौदा लाते हो। पैसे देते हो। बिना पैसे दिए सौदा नहीं मिलता। सतगुरु की हाट से भी बिना मूल्य दिये तुमको कुछ नहीं मिल सकता। वह मूल्य क्या है? वह सतगुरु की बात को ध्यान से सुनना, गुनना और मनन करना।

यही राधास्वामी मत कहता है—

दर्शन करे बचन पुनि सुने!
सुन सुन कर नित मन में गुने!!
गुन गुन काढ़ लेय तिस सारा!
काढ़ सार नित करे अहारा!!
कर अहार पुष्ट हुआ भाई!
जग भौ भय सब गये नसाई!!

अथात् गुरु की भी फीस होती है। जब तक फीस नहीं दोगे, कुछ नहीं मिलेगा।

स्वामी जी एक शब्द में कहते हैं—

सब ही आये सतगुरु आगे !
दर्श न पकड़ा बचन न लागे !!

तुमको जो सुमिरन ध्यान दिया जाता है यह इसीलिये है कि तुम्हारा मन जो बेकाबू होकर अनावश्यक और व्यर्थ के विचार, उठाता रहता है, वह न उठाये। इस मन को सुमिरन ध्यान या प्रम के मार्ग में लगा दो। बस! यह इसका असली अभिप्राय है। मैं पुस्तक लिखी बात नहीं कहता किन्तु यह कहता हूँ कि जो मेरा निजी अनुभव है मगर यह नहीं कहता कि यही ठीक हैं। यदि स्वामी जी को **'सार बचन'** लिखने, ऋषियों को शास्त्र लिखने का अधिकार था, तो जो मैंने इस 83 वर्ष की उमर तक अनुभव किया है उसके वर्णन करने का अधिकार मुझे भी है—

इसी तरह कबीर का कथन है—

मैं कहता हूँ आंखों देखी !
तू कहता है पुस्तक लेखी !!

जो सुमिरन ध्यान दिया जाता है यह इसलिये कि तुम्हारा मन जो तरह-तरह की बातें व्यर्थ सोचता रहता है उसके बजाय आशावादी विचार तुमको मिलें। विश्वास वाले विचार मिलें। क्या विश्वास ? यही कि जो करिहे सो भला। लो होगा सो अच्छा होगा। सतगुरु सब कुछ ठीक करेंगे। ऐसा विश्वास अन्तर में रखना यह है विष्णु गुरु।

★★★

नोट— उत्पत्ति से मेरा अभिप्राय केवल सन्तान उत्पन्न करने से ही नहीं है। जो विचार तुम उठाते रहते हो यह भी गुरु ब्रह्मा है।

यदि तुम बुरे, अशुद्ध विचार उठाते हो, ईर्ष्या, द्वेष मत्सर तुम मन में उत्पन्न करते हो तो तुमने गुरु ब्रह्मा के सिद्धान्त को नहीं समझा। वह जो तुम्हारे ईर्ष्या द्वेष मत्सर के विचार पैदा होते हैं यह तुम्हारे दुःख का कारण हो जायेंगे। प्रथम गुरु ब्रह्मा फिर गुरु विष्णु है फिर गुरु शिव है। जहाँ तक सन्तान उत्पत्ति का सम्बन्ध है यहाँ तुम्हारे मन के विचारों का भी सम्बन्ध है। वह गुरु ब्रह्मा है। इसलिए शास्त्र कहते हैं कि मन वचन कर्म से शुद्ध रहो। यही वेद-मार्ग है—

'शिव संकल्पमस्तु' !

कबीर पूर्ण पुरुष थे। सच्चा ज्ञान देते हैं कि संसार वालो! तुम्हारे कल्याण के लिये मैंने चार गुरु नियत कर दिये हैं। इनका सहारा लेकर तुम अपने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक जीवन को सुखदायक बनाओ। वे हैं— गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु महेश्वरः और यदि इस संसार से पार जाना चाहते हो तो— गुरु पारब्रह्म है हर एक आदमी प्रयत्न करता है अपनी उन्नति के लिए। चूंकि उसको ठीक पथ-प्रदर्शन (**Guidance**) नहीं मिलता, ठीक गुरु या सही तरीका मिला हुआ नहीं होता, इसलिए वह असफल हो जाता है। जो पहिले से चार गुरुओं की शरणागत हुआ है, उनका ज्ञान मिला हुआ है, वह आगे जा सकता है। यह सुरत का खेल है।



चतुर्थ सत्संग

(स्थान—टाँडा, जिला होशियारपुर)

[2-12-69

गुरु महेश्वर

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजै साहब से हेत, परम पद पाइये॥

सतगुरु की दुकान से क्या मिलता है? समझ, विवेक। जैसा कि मैं पहिले भी बता चुका हूँ कि कबीर ने चार गुरु बताये हैं—

चार गुरु मिल थापिल हो, जग के हैं कढ़ियार।
इनकी बहियां पकड़ रहो हो, हँसा उतरो पार॥

हिन्दू शास्त्रों ने भी चार गुरु वर्णन किये हैं। दो गुरुओं का वर्णन मैंने पहिले कर दिया। अब गुरु महेश्वर का वर्णन करता हूँ।

मैं अब समाधि में गया था। तुम रात को सो जाते हो। क्यों सोते हो? जब सो जाते हो तो क्या होता है? तुमको सुख मिलता है, शान्ति मिलती है। यदि रात को नींद न आवे तो तुम बेचैन हो जाओगे। जब तुम गहरी नीद में जाते हो, तुम्हारे साथ क्या होता है? तुम्हारे मस्तिष्क में गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु के जितने विचार होते हैं, जब सब समाप्त हो जाते हैं, तब तुमको नींद आती है। शिवजी क्या करते हैं? शिवजी का काम है संहार करना। शिवजी

भोलेनाथ कहलाते हैं। सुखदाता हैं। तो गुरु महेश्वर क्या हुआ ? जितने विचार तुम्हारे मस्तिष्क में उठते रहते हैं। तथा विकल्प उठते रहते हैं सबका नाश कर देना या संहार कर देना गुरु महेश्वर है। जब तक तुम मन के समस्त विचारों को नहीं भूल जाते तुमको नींद नहीं आती और तुमको सुख शान्ति अथवा आनन्द नहीं मिलता। इस प्रकार मनुष्य के अन्तर जितने विचार भाव उठते रहते हैं यदि उनको समाप्त नहीं करते तुम शान्ति को प्राप्त नही कर सकते। शान्ति प्राप्त करने का जो तरीका है उसका नाम है गुरु महेश्वर।

यह स्त्री बैठी हुई है कहती है मुझे बिजली के शौक (**Shock**) लगे थे। इसको मस्तिष्क की दशा वर्षों से ठीक नहीं थी। बिजली के लगने से जो कुछ विचार होते हैं वह भूल जाते हैं। यह नाम दान में तुमको समाधि का ख्याल दिया हुआ है। निर्विकल्प समाधि, सविकल्प समाधि, दशवाँ द्वार, महासून्य, इनके प्राप्त करने का तरीका है गुरु महेश्वर !

जीव जब उत्पन्न होता है रचना होती है। हमारे अन्तर रचना में हमको आनन्द मिलता है मगर यदि वह रचना समाप्त न हो अथवा हमारे मस्तिष्क की रचना समाप्त न हो तो हमको चैन नहीं मिल सकता है। रचना के समाप्त करने का अर्थ है संकल्प विकल्पों को छोड़ देना।

जो नाम दान तुम लोगों को मिलता है, समाधि लगाने का जो तरीका बताया जाता है वह क्या है ? तुम्हारे मस्तिष्क में जो गुरु ब्रह्मा या गुरु विष्णु हैं, यदि इनके साथ गुरु महेश्वर न मिलेगा तो जीवन शान्ति से नहीं गुजर सकता, तुमको शान्ति नहीं मिल सकती जिस प्रकार नींद के बिना तुमको शान्ति नहीं मिलती। इसलिए यह नाम दान है। शिव को ज्ञान का रूप बताया जाता है। वह जो विधि है समाधि लगाने की वह है मन के संकल्प विकल्पों को

छोड़कर निर्विकल्प अवस्था में चले जाना, शून्य या दसवें द्वार में चले जाना, इसका नाम है महेश्वर।

हम कौन हैं? शास्त्र कहते हैं हम आत्मा हैं। आत्मा प्रकाश स्वरूप हैं। तुम्हारो जो अपनी आत्मा है यह प्रकाश स्वरूप है। जब तक कोई आदमो अपने गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु महेश्वर से आगे नहीं जायेगा, अपने आपको प्रकाश में नहीं ले सकता। इसलिए प्रकाश या ज्योति स्वरूप का साधन ऋषियों ने तथा मुसलमान सूफियों ने तुमको बताया है।

यह गायत्री का मन्त्र है—

ओ३म् भुर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम तत्सवितुरवरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ।

यह क्या है? यह जागृत स्वप्न और सुषुप्ति से परे जो सावित्री रूपी सूर्य है उसके दर्शन करो। यदि कोई अपने असली घर जाना चाहता है, सच्चे मालिक से मिलना चाहता है, जहाँ से आकर हम इस देह में फँस गये हैं, तो उसके लिए यह साधन हैं। सांसारिक सुख के लिये यह ज्ञान है जो मैंने पहिले बताया है।

गुरु महेश्वर की दया से हमारा दसवाँ द्वार (महाशून्य) लग जाता है अथवा निर्विकल्प समाधि लग जाती है। फिर उसके या दसवें द्वार के आगे भंवर गुफा आती है। अर्थात् तुम्हारा सोहंग पुरुष या तुम्हारा आत्म स्वरूप प्रकाश। जब तक कोई अपने आत्म स्वरूप में नहीं जायेगा वह अपने घर नहीं पहुँच सकता। सच्चे साहिब से नहीं मिल सकता।

तुम गुरु ब्रह्मा के नियम के अनुसार काम करो तो इससे तुम्हारा गृहस्थ जोवन अच्छा हो जायेगा। गुरु विष्णु की सहायता लेकर विश्वास के रखने और आशावादी रहने से जीवन सुख से व्यतीत हो जायेगा।

मगर तुमको हमेशा इसमें रहने से शान्ति नहों मिलेगी, जैसे

जब तक तुम गहरी नींद में नहीं जाते तुमको शान्ति नहीं मिलती। फिर गुरु महेश्वर के पश्चात् गुरु पारब्रह्म है। वह पारब्रह्म क्या है? वह प्रकाश है तुम्हारे अन्तर। बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि सूर्य चन्द्र सितारे लाँघो। दस द्वारे लांघो। उसके आगे सतगुरु खड़ा है। दुनियाँ ने यह समझा हुआ है कि आगे बाबा फकीर डाढ़ी वाला, बाबा सावन सिंह जी सुन्दर पगड़ी वाला या स्वामी जी महाराज अथवा राम या कृष्ण दसवें द्वार से आगे खड़े हैं। यह भूल है। जो रूप तुमको आगे दिखाई देगा वह तो तुम्हारे विश्वास का रूप है। वह गुरु विष्णु है क्योंकि तुम्हारा मन ही रूप बनाता है। इसी भ्रम में सब राधास्वामी मत वाले आये हुए हैं। सनातनी राम और कृष्ण के उपासक भी इसी भ्रम में आये हुए हैं। यह मेरा अनुभव है। यह लोग प्रकाश में मेरे रूप को देखते हैं, कोई बाबा सावन सिंह जी के रूप को देखते हैं अथवा जो स्वामी जी के प्रेमी है उनके अन्तर में स्वामी जी दिखाई आते हैं। कबीर का चेला गरीब दास था। वह कहता कि आगे कबीर बैठा हुआ है। जो गरीब दास के शिष्य हैं वह कहते हैं गरीब दास बैठा हुआ है। लोग इसी को गुरु का रूप समझ गये। परिणाम यह निकला कि अपने घर कोई न जा सका।

मैं इसलिए कहता हूँ कि जब मैं जीवित होशियारपुर में बैठा हुआ हूँ और जो व्यक्ति यह कहता कि बाबा! मैंने तुमको बड़ भारी सात मील लम्बे चौड़े चन्द्रमा के प्रकाश में देखा। तू मेरी बाँह पकड़ कर ले गया वहाँ प्रकाश का घर व प्रकाश के आदमी थे। प्रकाश की नदी बह रही थी। वह कहता है मैंने उसको नहलाया। अब मैं तो था नहीं, तो मुझे निश्चय हो गया जो मेरे अन्तर दाता दयाल का जो प्रकाशमय रूप प्रगट होता था वह बाहर के दाता दयाल नहीं थे। वह तो जो संस्कार, ख्याल या विश्वास मेरी आत्मा पर जमा हुआ था, वह था। फिर जब मेरी आत्मा स्वयं प्रकाश स्वरूप बना उन संस्कारों के कारण मेरे प्रकाश रूपी आत्मा में

दाता दयाल का रूप दिखाई पड़ता था। इसी प्रकार दूसरों को और किसी का रूप दिखाई पड़ गया। जब तक आत्मा केवल अपने आत्मा के प्रकाश स्वरूप में नहीं जाता तब तक वह अपने घर जाने का अधिकारी नहीं होता।

शब्द की कड़ी है—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजै साहब से हेत, परम पद पाइये॥

जो सतगुरु के सत्संग से सच्ची समझ मिलती है, सच्चा विवेक मिलता है, सच्चा ज्ञान मिलता है। इसे अधिक जो कुछ भी इस गुरु मत में बताया गया है यह सब पाखण्ड है, धोखा है। इस धोखे में आकर इस माया के जाल में आकर हम गृहस्थी लोग जिनको सच्चा सत्संग नहीं मिला, मूर्ख बनाये गये और हमको लूट लिया गया। इन सम्प्रदायों और पन्थों ने हमको मूर्ख बना कर हमको पागल बनाकर लूट लिया।

मैंने कहा कि सच कहूँगा तो दुनियाँ मेरी विरोधी हो जायेगी। मैं सन् 1944 ई० में हुजूर बाबा साहब सिंह जी के चरणों में व्यास गया था। यह पूछने के लिए कि मैं काम करूँ या न करूँ। वह बड़े पवित्र पुरुष थे। उन्होंने कहा— फकीर चन्द ! एक तो जीव अधिकारी नहीं बात को समझने के, दूसरे डेरे के कारण मैं स्पष्ट वर्णन नहीं कर सका। तुम निर्भय होकर काम कर जाओ, मैं तुम्हारी पुश्त पनाह में रहूँगा।

यह बाबा सावन सिंह जी की दया है जिनके वचन मेरी रक्षा करते हैं। मेरे स्पष्ट वर्णन के कारण एक सन्त मत की गद्दी वालों ने यह निर्णय किया कि फकीर चन्द को कत्ल कर दो। कोई आदमी मेरा भी बैठा हुआ था, उसने मुझे बता दिया। मैं यह काम केवल निर्बल, अबल अज्ञानी जीवों के लिए करता हूँ। तुम भोले भाले

जीव हो। मैं स्वयं ऐसा ही था। तुमने तो कुछ सेवा नहीं की, मैं जानता हूँ मैंने क्या किया है? इसलिए इस 83 वर्ष को आयु में अपना कर्म का भोग भोग रहा हूँ। किसी पर कोई अहसान नहीं करता।

जो सत्संगी मालिक से मिलना चाहते हैं उनके लिये मेरा सन्देश है। जैसा मैंने पहिले कहा गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु। यह तुम्हारी दुनियाँ को बनायेगा, तुम्हारे घरेलू जोवन को शान्ति देगा और समृद्धिशालो बनायेगा। विश्वास के कारण तुम्हारा जीवन अच्छा व्यतीत हो जायगा। मगर यदि जोवनभर इसी में फँसे रहे तो तुम अपने घर नहीं जा सकते जहाँ से कि तुम आये हो। इस दुनियाँ में भली प्रकार जीवन व्यतीत करने के लिए गुरु ब्रह्मा और गुरु विष्णु है और साथ ही गुरु पारब्रह्म है प्रकाश। गायत्रो और प्राणायाम मन्त्र में हिन्दू ऋषियों ने हमको उपाय बताया है। जब प्रकाश अन्तर में प्रग्रट हो जाता है तो वह प्रकाश मालिक का घर नही है। मालिक का घर प्रकाश से आगे है, जहां से हम आये हैं, क्योंकि प्रकाश रचना करता है। इस मूर्त्ति मान जगत में यदि सूर्य न हो तो यहां कोई वस्तु उत्पन्न नहीं हो सकती। हम यहाँ जीवित नहीं रह सकते। यह प्रकाश ही ब्रह्म है। जब यह प्रकाश (ज्योति) शरीर में आता है तो शरीर में आने से मन बनता है मन बुद्धि चित्त अहँकार बनते हैं। यह मन बुद्धि चित्त अहँकार माया है। जब तक कोई ब्रह्म और माया से नहीं निकलेगा इनका यह चक्र समाप्त न होगा।

स्वामी जी की बाणी है—

चार खान चौंपड़ जग रची।
अण्ड जेर सेदज अद्‌भजी ।।

इस चार खान के उत्पन्न करने वाला कौन है? पारब्रह्म! प्रकाश। एक प्रकाश तो सूर्य का है और एक प्रकाश है पारब्रह्म या उसका जिससे यह सूर्य चाँद सितारे लोक लोकान्तर सब बनते हैं।

पारब्रह्म जब मिल जाता है उससे आगे फिर सतगुरु रहता है जो तुमको हमेशा के लिये इस देश से निकाल कर ले जाएगा।

चार खान चौपड़ जग रची।
अण्ड जेर सेदज अद्‌भजी॥
माया ब्रह्म पुरुष प्रकृति।
मन इच्छा खेलें शिव शक्ति।।

वह जो प्रकाश रूपी पारब्रह्म है तुम उसका कोई नाम रख लो— राम कहो, कर्त्तापुरुष कहो, भगवान, या खुदा कह लो, ब्रह्म कह लो। यह शब्दों के झगड़े हैं। वह प्रकाश का लोक ऊपर है। हमारे अन्तर प्रकाश का देश हमारा आत्म स्वरूप है। वह प्रकाश स्वरूपी आत्मा जब देह में आता है तो यह मन बुद्धि चित्त अहँकार बनकर खेल खेलते हैं। ब्रह्मा विष्णु तथा महेश्वर खेल खेलते हैं। इसी में हम कभी दुःख उठाते हैं, कभी सुख। कभी आनन्द लेते हैं, कभी चिन्ता फिक्र करते हैं। यह खेल की धूम मची हुई है।

अब जो वस्तु प्रकाश या नूर में आई हुई है और प्रकाश को देखती है वह क्या है? वह हम हैं या हमारी सुरत है। प्रकाश में आने के कारण उस सुरत की चेष्टा नीचे की ओर हो जाती है। हम शारीरिक जीवन, मानसिक जीवन और आत्मिक खेलों में खेलते हैं और इस खेल की हर समय धूम मची रहती है। तुम्हारा प्रकाश स्वरूपी आत्मा जब देह में ऊपर से नीचे की ओर उतर आता है तो तुम्हारा मन बुद्धि चित्त अहँकार बन जाते हैं। फिर वही शरीर में आ जाता है। तुम्हारी ही आत्मा शरीर को महसूस (अनुभव) करती है, मानसिक विचारों को अनुभव करती है और प्रकाश को देखती है।

सुरत नरद तामें बहु पची
धूम खेल की अति कर मची।

तीन गुनन का पासा लीन्ह
रजगुण तमगुण सतगुण चीन्ह ।

यह रजोगुण आदि हैं क्या? तुम्हारे जीवन के भिन्न-भिन्न प्रकार के भान (अहसासात) हैं। तुम्हारे जीवन की चेतनायें हैं— कभी शारीरिक, कभी मानसिक, कभी आत्मिक। यही प्रकृति है। वह जो सुरत है वह इस त्रिलोकी में आकर सुख-दुःख भोगती है, जब आत्मा में चली जाती है आनन्दमय हो जाती है। शारीरिक भान सत है, मन के भान बोध चित्त है, जो आत्मा की चेतनायें है वह आनन्द है। यही सत्त-चित्त आनन्द है।

हम सच्चिदानन्द में ही चक्कर लगाते रहते हैं—

कर्म हाथ के पास डारे,
भोग अँक तामें विस्तारे।
झूठी बाजी जानी सच्ची
कोई पक्की कोई मारे कच्ची ॥

लोग चौरासी में चौपड खेलते हैं। उसके 84 घर होते हैं। इस स्वामी जी का क्या भाव है मैं नहीं जानता। लोग 84 लक्ष कहते हैं। जिन्होंने कहा हमको प्रमाण नहीं दे सकते कि चौरासी लाख योनि हैं। जो मैंने समझा है वह कहता हूँ। चौरासी योनि क्या हैं? छः देह के चक्र, छः मन के चक्र 12 हुए और पाञ्च कर्मेन्द्रियां या ज्ञानेन्द्रियां, आत्मा और बुद्धि 7 हुए। इनको 12 से गुणा तो 84 हुए। इन चौरासी प्रकार के भान बोध में हमारी सुरत चौबीस घण्टे खेलती रहती है। यह 84 का चक्र है। मैं नहीं कहता कि मरने के बाद 84 नहीं हैं। मगर मेरे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। मैं इसको 84 समझता हूँ। हमारे अन्तर वासना या इच्छा जो हैं वह हमारा कर्म बन जाती हैं। यही शास्त्र कहते हैं कि जब तक कोई वासना रहित नहीं होगा, अपने घर नहीं जा सकता, मगर वासना के बिना तो हम रह नही सकते। इसलिए सन्तों ने कहा है कि निर्वासना

होने की वासना करो। यह वासना का देश है। इस देश का कानून यही है कि बिना वासना के हम रह नहीं सकते। इसलिये वासना रक्खो अपने घर जाने की।

मनुष्य पासा खेलता है—

नरद सुरत चौरासी घर में
भरमत फिरे दुःख और सुख में।
हारे ब्रह्म और जीती माया
जीव नरद बहु विधि दुःख पाया ॥

ब्रह्म हर समय कैसे हारता है? ब्रह्म है प्रकाश। मरते समय कोई भाग्यवान ही हैं जिसके अन्दर प्रकाश आता है। हमारे हिन्दू शास्त्रों ने बहुत कुछ सच्चाई से काम लिया है। इसको समझने वालो दुनियां नहीं है। जब आदमी मारता है हिन्दुओं में दस दिन तक दीपक जलाते हैं। क्यों जलाते हैं? इसलिए कि मरने वाले के सूक्ष्म शरीर को यह ख्याल दिया जाय कि तेरा घर प्रकाश है। यह है दीपक जलाने का मन्तव्य। गायत्री मन्त्र के द्वारा हिन्दुओं ने प्रकाश का ख्याल तो बच्चों को दिया ही हुआ है कि सावित्री का साधन करो, अन्त समय जब आया तो उसके सामने दीपक जला कर रख दिया कि तेरा वह घर है। किसी भाग्यवान को ही प्रकाश दृष्टिगोचर होता है नहीं तो पुत्र, स्त्री दृष्टि में आयेंगे। किसी को राम आयेगा मगर जो रूप दृष्टि में आयेगा वह तो माया का रूप है। तुम्हारा घर दिखाई नहीं आया।

कहते हैं कि गुरु ले जायगा। यह केवल हौसला दिया हुआ है मगर सच्चाई नहीं। मुझे अभी दो महिने हुए इटारसी से चिट्ठी आई। वहाँ एक तुलसी राम है। उसका बाप मर गया। मरने से तीन दिन पहिले वह कहता है कि बाबा फकीर आया हैं कहता है, परसों ले जाऊँगा। जब मरने लगा तो तीन घण्टे पहले अपनी स्त्री

को कहता है कि दयाल फकीर आ गया हवाई जहाज लेकर। उसका नम्बर 35610 है। अब मैं तो गया नहीं। मुझ कोई पता नहीं। तो क्या वह मरने वाला व्यक्ति सत लोक गया। बिल्कुल असत्य !

यही बात हजूर महाराज राय साहिब सालिग राम साहब ने अपनी **'प्रेमबाणी'** में लिखी है। यह वह महापुरुष हैं जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है। वह लिख गए कि अन्त समय में जीव के आगे फिल्म चलती है। उसने जो जो कुछ किया हुआ है वह रूप रंग उसके सामने आते हैं। जिस गुरु से नाम लिया हुआ है वह गुरु भी आ जाता है। वह कुछ समय तक ऊपर सूक्ष्म शरीर में रहता है। उसको दर्शन तथा सत्संग भी मिलता रहता है। जब कोई सन्त सतगुरु दुनियाँ में फिर आता है। उस समय उसको अच्छे कुल में जन्म मिलता है। फिर वह चुम्बक के नियम के अनुसार उसके सम्पर्क में आता है और बाकी कमाई पूरी करता है। इस समय लोगों को एक आकर्षण दिया हुआ है कि नाम ले लो। करनी कुछ न करो। अन्त समय में सतगुरु सत लोक में ले जायेगा। मैंने राधास्वामी मत के सञ्चालक की बाणी तुमको सुना दी। अपना अनुभव बता दिया कि मैं मरते समय कहीं नहीं जाता। तुम मुझ बुरा कहो चाहे भला कहो। इस प्रकार का गलत प्रोपेगण्डा करके हम गृहस्थियों की सम्पत्ति इन धर्म पन्थ वालों ने लूटी है। मैं जो कुछ कहता हूँ उसको मेरे सामने सब मानते हैं।

यह मेरे जीवन के अपने अनुभव हैं। इसलिए मैं संसार में सन्त सतगुरु वक्त उठा हूँ कि ऐ भोले भाले जीवो ! तुमको हम महात्माओं ने तुम्हारो आँखों में मिट्टी डाल कर अपना जानवर बनाया है, तुमसे नाक रिगड़वाई है। तुमने अपना पेट काट कर इनके डेरे धाम मन्दिर इस अज्ञान में आकर बनवाये हैं कि अन्त समय तुमको गुरु ले जायेगा।

डाक्टर साहब ! आपको सत्संग कराये जाता हूँ। आप राधास्वामी मत के हैं। दुनियाँ को सीधा रास्ता दिखाओ। दुनियाँ को अज्ञान में रखकर उनकी आँखों में मिट्टी मत डालो।

जग में घोर अन्धेरा भारी।

तन में तुम का भण्डारा ॥

जग में अन्धेरा कैसे है? दिन में सूर्य चमक रहा है रात को चन्द्रमा सितारे चमकते होते हैं। वह अन्धेरे का अर्थ अनसमझी से है, अज्ञान से है।

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति देखा।

भूल भुलैयां धरमारा ॥

यह सन्तों की बाणी है। तुम गरुड़ पुराण को पढ़ो। मेरी स्त्री मर गई थी। मैं ब्राह्मण हूँ यद्यपि मैं राधास्वामी मत का हूँ। मेंने अपनी मर्यादा को नहीं तोड़ा। मैंने संसार के नियम को गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु महेश्वर के नियम को नहीं तोड़ा। गरुड़ पुराण जो मैंने सुना उस पर मैंने एक पुस्तक **'गरुड़ पुराण रहस्य'** लिखी और स्वामी जी की बाणी से एकता कर दी। गरुड़ पुराण में लिखी है कि जब तक सुरत पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म को पार नहीं करती उसका आवागवन समाप्त नहीं होता। शिक्षा वही है जो हमारा आदि सनातन धर्म देता है मगर उसके वर्णन करने वालों ने बताया नहीं। दुनियां को भूल भुलैयाँ में डाल दिया। ब्राह्मणों ने ऐसी-ऐसी बातें कहीं कि जिसकी गणना नहीं। पण्डितों का राज था। अब सन्तों और साधुओं का राज आया। अब इनकी गद्दी चढ़ी हुई है। रोचक और भयानक बातें बना-बना कर जीवों को मूर्ख बनाया गया। लोगों ने बाणी को नहीं समझा।

कबीर साहब की साखी के शब्द के एक अँग में अन्तिम कड़ी है—

बेटा बेटी स्त्री, साध कहें सो देय।
सिर साधुन को सोंप कर,
जनम सुफल कर लेय॥

ऐसी-ऐसी बेतुकी रोचक और भयानक बातें कहीं गईं। देते फिरो अब साधुओं को अपनी बेटियां स्त्रियाँ! क्या इस बाणी के अनुसार तर जाओगे? सोचो! आँखें खोलो!

यदि परम पद को पाना चाहते हो और दुनियाँ में सुखी रहना चाहते हो तो दुनियां के लिए गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, शान्ति के लिए गुरु महेश्वर है और अपने घर जाने के लिए गुरु पारब्रह्म प्रकाश है।

शब्द की कड़ी है—

चार खान चौंपड़ जग रची,
अण्ड जेर सेदज अदभिजी।
माया ब्रह्म पुरुष प्रकृती,
मन इच्छा खेले शिव शक्ति॥
सुरत नरद तामे बहु पची,
धूम खेल की अति कर मची॥
तीन गुनन का पासा लीन्ह,
रजगुन तमगुन सतगुन चीन्ह॥
करम हाथ से पासे डारे,
भोग अङ्क ता में विस्तारे॥

यह स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य बाणी है। कितनी सच्चाई से वर्णन किया जा रहा है।

झूठी बाजी जानी सच्ची,
कोई पक्की कोई मारी कच्ची ॥

मुझको यह समझ नहीं आती थी कि झूठी बाजी सच्ची कैसे होती है? ऐ सत्संगियो! यह समझ मुझको तुम से मिली? जैसा कि तुलसी राम ने लिखा कि मैं हवाई जहाज में उसके बाप को मरते समय ले गया। मगर मैं तो था नहीं। अब जो कुछ उसको दृष्टिगोचर हुआ वह था नहीं। वह भासता था। झूठ था। वहाँ फकीर चन्द नहीं था। वहाँ हवाई जहाज नहीं था। वह झूठी बाजी थी मरने वाले ने उसको सच्चा माना। ऐसी-ऐसी घटनाओं ने मेरी आँखें खोल दी। आज ही नहीं किन्तु सन् 1919 ई० से खुली हुई हैं। तुम्हारे अन्तर रूप रंग अर्थात् दृश्य उत्पन्न होते हैं। तुम अपने ही भ्रम या विचार में फंस जाते हो। उसी विचार या भ्रम में तुम दुःखी हो जाते हो और सुखी भी हो जाते हो। यही माया है। जब तक कोई इससे नहीं निकलेगा, उसका उद्धार नहीं हो सकता। यदि इस माया को या अपने मन को किसी सतगुरु की हाट ले जाओ, वहाँ से सच्चा सौदा ले आओ तब तुम इस चक्र से निकल सकते हो। यदि हार चढ़ाने, भोजन कराने, मानवता मन्दिर बनाने तक ही तुम्हारा विचार सीमित है तो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा।

एक झूठी बाजी को सच्ची मान कर केवल थोड़ा सा आनन्द ले लोगे—

नरद सुरत चौरासी घर में,
भरमत फिरे दुक्ख और सुख में।
हारे ब्रह्म और जीती माया,
जीव नरद बहु विधि दुःख पाया ॥

मनुष्य मन के ख्यालों में हो रहा। कोई किसी रूप के पीछे दौड़ा, कभी अच्छी योनि मिली, कभी बुरी। इसको कहते हैं कि

हमेशा माया जीतती है । कभी-कभी किसी भाग्यशाली की जीत होती है।

कहा हैं—

कभी कभी ब्रह्म जीत जो होई ।
नरद लाल होय ब्रह्म घर सोई ॥
चौपड़ से बाहर नहिं होई ।
निज घर अपना पाये न कोई ॥

कोई मनुष्य प्रकाश लोक में जाकर टिक गया। इस आवागवन से बच गया, मगर खिलाड़ी अपने खेल को पूरा करने के लिए इस पक्की गोट को निकाल कर, फिर उसको चौरासी के घर में फेंक देता है । इसलिए असली मोक्ष प्रकाश में जाने से नहीं मिली। हो सकता है वही प्रकाश या नूर फिर किसी समय तुमको यहाँ भेज दे।

शब्द ब्रह्म के बिना कोई आदमी हमेशा के लिए इस काल की रचना से निकल नहीं सकता क्योंकि जो रचना होती है वह प्रकाश (नूर) से होती है। वह सौदा है जो सन्तों के दरबार से मिलता है। क्या सौदा है? सच्चा ज्ञान मगर सर्व साधारण इसके अधिकारी नहीं, इसलिये,

लालों की नहिं बोरियां, हंसों की नहिं पांत ।
सिहों के लंहड़े नहीं, साध न चलें जमात ॥

जब किसी भाग्यशाली का पिछले जन्म का कर्म उदय होता है उसको संत का सत्संग मिलता है। संत के पास से तुमको सच्चा ज्ञान मिलता है । और जो कुछ तुमको मिलता है यह तुम्हारा विश्वास है।

वह व्यक्ति जो बैठा है मुझे अपने घर में ले गया। इसका विश्वास है कि मैंने इसका मकान बना दिया मगर मैंने कुछ नहीं किया। ऐ इन्सान ! तू भूला हुआ है। तेरी सहायता करने वाला तेरा अपना ही विश्वास है चाहे जिस पर रक्खा। कोई गंगा जी पर विश्वास रखता है, कोई मुझ पर, मगर न गंगा जी देती हैं न मैं देता हूँ। यदि मैं देता होता तो 14 वर्ष मेरी लड़की के व्याह को हो गये, उसको सन्तान दे देता। मैं सच्चा ज्ञान देता हूँ। असली और सच्चा सतगुरु कहाँ रहता है ? वह मैं उस महापुरुष का शब्द सुना कर बताता हूँ जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है, जिन्होंने अपने गुरु की इतनी सेवा की जिसका कोई हिसाब नहीं, जो पोस्ट मास्टर जनरल होते हुये सारी कमाई गुरु के आगे रख देते थे।

वह बताते हैं कि सत्गुरु कहाँ रहता है :—

सखी री मोहि मत रोको,
मैं तो जाऊंगी सत्गुरु पास !
सत्गुरु मेरे अधर विराजें,
वही सन्तन का वास !!
पिण्ड अण्ड और ब्रह्मण्ड के पारा,
सत अलख अगम निवास !!

वह कहते हैं कि मैं (सुरत) अपने सतगुरु के पास जाऊँगी। वह पिंड अंड और ब्रह्माण्ड से परे रहता है। उन्होंने यह नहीं कहा कि मेरा गुरु पन्ना गली (आगरा) में रहता है। मगर हम कहते हैं कि हमारा गुरु ब्यास में रहता है या होशियारपुर या आगरे में रहता है। यह राधास्वामी मत में कहीं लिखा हुआ नहीं हैं। इस अज्ञान की शिक्षा से अच्छे कुल की स्त्रियां इस पागलपन में आकर साधुओं के पीछे दौड़ती फिरती हैं। एक स्त्री हुजूर बाबा सावन सिंह के चेले को साधु समझ कर उसके सत्संग में जाती थी। उसकी सेवा

करती थी। उसके पति लड़के और लड़कियों को उसके चाल चलन पर सन्देह हो गया। उसका आदर उनकी दृष्टि में चला गया। वे सब उससे घृणा करने लगे। घर में अशान्ति आ गई। पति दुखी होकर घर को छोड़कर दूसरे शहर में चला गया। घर में क्लेश हो गया। किसी ने कहा बाबा फकीर के पास चले जाओ। बारह आदमी आये। सारा हाल सुना। मैंने उसके पति को बुलाया। मैंने कहा तुम क्या समझ कर मेरे पास आये हो? कहा—"संत"। क्या संत कभी झूठ बोलता है? कहा—"नहीं"। मैं भी शपथ से कहता हूँ कि मैं झूठ नहीं बोलता। तेरी स्त्री में कोई दोष नहीं है। यह अज्ञान का आध्यात्मिक आवेश है जिस के कारण उस साधु के पीछे फिरती है। मैंने उस स्त्री का सिर पकड़ा और उसके पति के चरणों में झुकाते हुए कहा. शिवजी महाराज ! यह मेरी लड़की है। आपको देता हूँ। मैंने उसके घर को बसाने के लिये शपथ खाई। मेरी आत्मा मानती थी कि स्त्री निर्दोष है। ऐस क्यों होता है? क्योंकि सन्त मत की शिक्षा को सच्चाई से प्रकट नहीं किया गया। बात का बतंगड़ा बना के रख दिया गया।

एक बार मैं जिला होशियारपुर में ग्राम भम्बूताड़ गया। पहिली अष्टपदी पर मैंने सत्संग कराया। वहाँ एक सरदार बैठा हुआ था और एक स्त्री थी। मैं देखता रहा वह दोनों रोते रहे। सत्संग के बाद दोनों मेरे पास अलग से आये। स्त्री के हाथों, कलाईयों और गर्दन पर घाव थे। मैंने पूछा यह क्या है? वह ब्राह्मणी थी। उसने कहा कि मैं घर वालों से चोरी से सत्संग में जाती हूँ। वहाँ से जब आती हूँ तो घर वाले मुझे चाकुओं से मारते हैं। यह घाव व घाव के भरे हुए निशान हैं। मैंने कहा कि फिर तू सत्संग में क्यों जाती है? बाबा जी बुलाते हैं। कैसे बुलाते हैं? चिट्ठी लिखते हैं। दर्शन देते हैं। सामने आ जाते हैं। कहते हैं सत्संग में आ जा। फिर तुमने बाबा जी से पूछा कि जब आप मुझे सत्संग में बुलाते हैं तो फिर यह मुझे क्यों मारते हैं। कोई उत्तर नहीं दिया। देखो! यह जितने रूप रंग तुम्हारे अन्तर पैदा होते हैं

यह सब तुम्हारे मन के हैं इसलिए सन्तों के मार्ग में जीवित पूर्ण गुरु की खोज करो।

आदेश है—

गुरु खोजो री, जग में दुर्लभ रतन यही ।

तुम उसको गुरु मानते हो जिसके रूप तुम्हारे अन्तर में प्रगट होते हैं। वह सरदार मिला। मैंने कहा तू बड़ा प्रेमी है जो रोता है। उसने कहा प्रेमी क्या हूँ अपने कर्मों को रोता हूँ ! क्या बात है ? मैं किसी महापुरुष के पास पाठी था। स्त्रियाँ मुझ से प्रेम करती थी। मैंने अपने अज्ञान से छ:-सात स्त्रियों के सत लिये हुए हैं। मैंने रात आपका सत्संग सुना है। उन कर्मों को रोता हूँ ।

इसलिये मैं जोरदार शब्दों में कहता हूँ कि स्त्रियाँ किसी साधु महात्मा के पाँव को हाथ न लगायें। न उसकी सेवा करें। सत्संग करो, वचन सुनो और बाणी को समझने का प्रयत्न करो। टाँगें दबाने से कल्याण नहीं होगा । तुम भ्रम में हो । तुम्हारे मनों के अन्तर जो गलत समझ, गलत बात, बैठी हुई है। मेरे वचन आपरेशन करके उस गन्दे तत्व या गलत समझ को निकालते हैं। जिस तरह आपरेशन करने वाले डाक्टर से रोगी घबराता है। इसी तरह मेरे सत्संग से अज्ञानी और अनसमझ जीव, जिनके दिमाग में गलत विचार, गलत भ्रम भरे हुए हैं, वह आपरेशन कराने से डरते है।

मैंने सत्संग शुरू किया था—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये !
कीजै साहब से हेतु, परम पद पाइये !!

सतगुरु की संगत में जाकर उसकी दुकान पर क्या मिलता है ? सच्चा ज्ञान मिलता है। असली सतगुरु का देश सत अलख अगम में हैं। तुम सतगुरु को समझते हो होशियारपुर ब्यास या आगरे।

यदि वह सच्चा गुरु है तो तुमको सतगुरु अर्थात् जहां असली सच्चा गुरु रहता है उसका पता दे देगा। वह तुमको मन्दिर डेरे में नहीं फंसायेगा।

छवि प्रीतम की महामोहनी,
महलन अजब उजास!
जगत जीव सब हुए हैं बावरे,
नहीं करें चरण विश्वास!!
धन और मान भोग रस चाहें,
सब पड़े काल की फांस!!

अब यह व्यक्ति मुझे अपने घर ले गया, इसका काम बन गया। अब इस ख्याल से मेरा आदर करता है कि मैंने यह मकान बना दिया, और मैं यह सम्मान लेता हूँ, स्पष्ट वर्णन नहीं करता तो मैं अपराधी हूँ। ऐ मानव ! तुझको जो कुछ मिलता है वह तुझको तेरे कर्म से मिलता है पिछले या इस जन्म के। किसी महात्मा ने तुमको फूँक मार कर नहीं देना है। तुम्हारा अपना ही श्रद्धा और विश्वास है। यहां लिखा है :—

जगत जीव सब भये हैं बाबरे, नहीं करें चरण विश्वास।

अब तुम चरणों को यह समझते हैं कि जो मेरे पैर हैं या हुजूर सांवले शाह या दाता दयाल के पैर थे। दीवानों! तुमको सत्संग को हवा भी नहीं लगी। हुजूर महाराज ने अपनी 'प्रेमवाणी' में लिखा है कि सतगुरु केवल शब्द स्वरूपी राधास्वामी दयाल हैं। उनके चरण प्रकाश है। वह जो प्रकाश है। पारब्रह्म, वह गुरु के असली चरण हैं। जब तक कोई आदमी अपने अन्तर में पहिले प्रकाश को प्रगट नहीं करेगा, वह अपने घर नहीं जा सकता। जब प्रकाश हो जाता है। फिर आगे शब्द गुरु आ जाता है।

शब्द गुरु को कीजिये, बहुते गुरु लबार !
अपने-अपने स्वाद को, ठौंर-ठौर बट मार !!

शब्द गुरु को मानो। बहुत से गुरु घूमते हैं। यह अपने-अपने स्वाद के लिये रास्ते में डाका डालते हैं। कबोर का कथन है :—

सतगुरु चीन्हो रे भाई !!
सत्त नाम बिन सब नर बूढ़े, नरक पड़े चतुराई !!

वेद पुराण भागवत गीता, इनको सबै दृढ़ावै !
जाको जन्म सुफल रे भाई, सो गुरु पुरा पावै !
बहुत गुरु संसार कहावें, मन्त्र देत हैं काना !
उपजै विनसै या भवसागर, मर्म न काहू जाना !!

सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कढ़िहारा !
कहें कबीर जगत के गुरुआ, मर मर लें अवतारा !!

कोई तो बाबा फकीर चन्द को सतगुरु मानता है, कोई महर्षि जी को, कोई किसी और को। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, सच्ची बुद्धि का, सच्चे विवेक का। वह ज्ञान रूपी सतगुरु है। दुनियाँ इस देह को गुरु मानकर पागल हो गई। हमारे झगड़े पड़ गये। हम में शत्रुता आ गई, मैं राधास्वामी मत का हूँ। स्वामो बाग वाले दयाल बाग से घृणा करते है। व्यास वाले सावन आश्रम से घृणा करते हैं। हिन्दू मुसलमानों से घृणा करते हैं। सिक्ख अपना अलग राग गाते हैं।

अपना-अपना मत अपना-अपना हाल है—

सतगुरु है ज्ञान; बुद्धि और विवेक ! यह सच्चा ज्ञान,

सच्चा विवेक जिस महापुरुष से मिल जाय उसके लिए वही गुरु हैं। अब यदि दुनियाँ यह कहे कि जो फकीर चन्द को गुरु धारण

नहीं करेगा उसका बेड़ा पार नहीं होगा, तो गलत। कुछ बुद्धि से काम लो। तुम सौदा लेकर दुकान से आते हो। यदि दाल चावल को पकाओ नहीं तो जैसा ही सौदा लिया वैसा ही न लिया। यदि सत्संग में जाकर जैसा तुम समझ लेते हो, उसके अनुसार जीवन नहीं बिताते तो ऐसे सत्संग से क्या लाभ ?

यदि सच्चे साहब से मिलना है तो—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः !
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुये नमः !!

इस ढंग से जीवन व्यतीत करो और प्रकाश को पकड़ो। इसके आगे शब्द ब्रह्म है, नाम है जिसने तुम्हारा बेड़ा पार करके तुमको आवागवन से सदा के लिए छुड़ाना है। सब कुछ तुम्हारे अन्तर है। अपने घट में बैठो। बस !

सम्भव है मेरे स्पष्ट वर्णन से किसी का दिल दुखा हो, इसलिए क्षमा चाहता हूँ।

!! सबको शान्ति !!



पञ्चम सत्संग

[स्थान—होशियारपुर ता० 16-12-69]

आज यह शब्द पढ़ा गया—

गुरु आदि मध्य अनन्त अद्भुत अमल अगम अगोचरम् !

(यह शब्द प्रार्थना के शब्द में प्रारम्भ में दे दिया गया है)

जीवन एक मुअम्मा या रहस्य है जो मुझ से वो हल नहीं हुआ। मैंने सारा जीवन इसी के हल करने में खो दिया। जितना हल हुआ उतना कहा।

जब होश आया, चेतनता का भान हुआ। दुनियां को देखा। दुनियाँ के बनाने वाले का ख्याल हुआ। उससे मिलने की चाह हुई क्योंकि हिन्दू धर्म के संस्कार मिले थे। 14, 15 वर्ष की आयु में कुछ गलतियाँ की। सन् 1904 ई० में जब काँगड़े का भूचाल आया उस दिन बड़े भाई पण्डित रामनारायण के संस्कार से ख्याल पैदा हुआ कि मैंने पाप किये हैं। इससे बचने का कोई उपाय हो, क्योंकि हिन्दू था। ख्याल मिला था कि यदि मालिक मिल जाय तो पाप दूर हो जाते हैं।

रामायण के संस्कारों से विश्वास हुआ—

नाना भान्ति राम अवतारा !
रामायण शत कोटि अपारा !!

बस इसी ख्याल में उन्तम हो गया। ऐ मालिक ! ऐ परमात्मा ! तू मुझे मानव रूप में मिल जा। मेरा खब्त था जिसने मुझको

बहुत समय तक उन्मत्त रक्खा। एक दिन 24 घण्टे रोया। उस रोने के बाद एक दृश्य था जिसने यह विश्वास दिलाया कि वह राम दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी के रूप में आया हुआ है। उस भावना में उनके चरणों में गया। उन्होंने मेरे विचारों को बदल कर गुरु मत की ओर आकर्षित किया।

एक शब्द में लिखते हैं—

फकीरा ! सोच समझ पग धार !

उसकी अन्तिम कड़ी है—

राधास्वामी चरण शरण बलिहारी,
गुरु सेवक हुआ पार !!

यह राधास्वामी मत, कबीर मत या सन्तों का मार्ग मेरे भाग्य में आया। चूँकि इस मत में ईश्वर, परमेश्वर और समस्त धर्म सम्प्रदायों को काल और माया मत बताया था और गुरु मत को उच्च रक्खा था। तो मैंने प्रण किया था कि मैं इस मार्ग पर चलूंगा और जो कुछ अनुभव में आयेगा वह कह जाऊँगा। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा अथवा अन्य की भक्तियों से बढ़कर गुरु भक्ति है? यदि है तो क्यों? क्योंकि ईश्वर का तो किसी ने अन्त नहीं पाया। क्या किसी को ईश्वर के विराट रूप या सृष्टि का पूरा ज्ञान हो सकता है? यह ईश्वर ही हैं जो सूर्य चन्द्रमा सितारों और इस सृष्टि को रचता है।

गुरु नानक का कथन है—

ऊँचे से ऊँचा प्रभु बेअन्त स्वामी।

ईश्वर के इस स्थूल जगत का ही किसी को अन्त नहीं मिलता, सूक्ष्म जगत का भी किसी को अन्त नहीं मिलता, और प्रकाश तथा शब्द के लोक का भी किसी को अन्त नहीं मिलता। जिस वस्तु का

अन्त नहीं मिलता उसको कोई क्या जान सकेगा ? खोजते चलो। मैंने खोज-खोज के देख लिया। मुझे तो अन्त मिला नहीं। मैं यह भी कह सकता हूँ कि किसी को भी उसका अन्त नहीं मिला। हमारे शास्त्रों में यही बात कही गई है।

ईसाई ईसामसीह को ईश्वर का बेटा मानते हैं। उसने बाइबिल में लिखा कि पृथ्वी चौड़ी है। अब साईंस सिद्ध करती है कि पृथ्वी गोल है क्या ईसामसीह को उसका अन्त मिला ? नहीं। मैंने बड़े-बड़े महापुरुषों के जीवन देखे हैं। क्या उनको पता लगा कि क्या होने वाला है ?

पलटू साहब के जीवन को देखो जो कहते थे—

साधो हम वहाँ के वासी।
जहाँ पहुँचे नहिं अविनासी॥

वही पलटू साहब जो कहते हैं कि जिस काम को ईश्वर नहीं कर सकता उसे सन्त कर सकते हैं, सन्त टाल सकते हैं। मगर दूसरे साधुओं ने स्वयं उनको जिन्दा उठा कर खोलते हुए तेल के कढ़ाव में डाल दिया। दाता दयाल थे। धाम की नींव रक्खी। वह उनके ही जीवन में उजड़ गया। क्या उनको पता लगा कि मैं धाम की स्थापना कर रहा हूँ वह उजड़ जायगा। कोई भी व्यक्ति जो दुनियां में आया— पीर, पैगम्बर रसूल, अवतार, किसी को कोई पता नहीं लगा कि इस सृष्टि में कुदरत का क्या रहस्य है ?

चूंकि प्रकृति का भेद कोई नहीं पा सका, जितनी-जितनी जिसको बुद्धि थी उसके अनुसार हर एक आदमी ने अपनी-अपनी बाणी कही। जब तक उस वस्तु का अन्त नहीं मिलता, जिस वस्तु की कि वह खोज करता है उसको शान्ति नहीं मिलती। उसकी खोज चालू रहती हैं। इस खोज को समाप्त करने के लिए गुरु मत है।

गुरु नाम है अनुभव का, ज्ञान का, समझ का। जितनी जिस-

जिस मनुष्य को बुद्धि है उस-उसके अनुसार चलकर अपने आपको शान्त रख सकता है। इसलिए मैं गुरु मत को उच्चतर समझता हूँ, क्योंकि गुरुमत शान्ति देता है। यह गुरुमत जो मैंने समझा, जो कबीर ने कहा, उस पर मैंने चार, सत्संग (झाबाल और टाँडा) में दिये—

कबीर का शब्द था—

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये !
कीजै साहब से हेत, परम पद पाइये !!

वह साहब से हेत क्या है ? साहब है निज स्वरूप (जात) अकाल पुरुष, मालिक, या शक्ति या एनरजी का भण्डार है, जहाँ मन बुद्धि, सब फेल हो जाते हैं। फिर परम पद क्या हुआ ? अपने जीवन को कशमकश को, खोज को समाप्त करके ऐसी अवस्था में चला जाता हूँ जहाँ न संसार है न संसार का व्यवहार है और न अपना चेत है। संकल्प विकल्प से निकल कर अपने स्वरूप में विलय हो जाता हूँ। मैं इस अवस्था को परम पद समझता हूँ। इस सहज अवस्था को प्राप्त करने के लिये कबीर ने उस अवस्था का वर्णन किया है कि वह परम पद क्या है ? मैंने जैसे पहिले कहा है कि उसका अन्त तो किसी को मिला नहीं, वह अनन्त है। उसका कोई रूप नहीं, रंग नहीं।

कबीर का शब्द है—

दूर गवन तरो हँसा हो, घर अगम अपार।
नहि कहाँ काया नहि वहाँ माया,
नहि वहाँ त्रिगुन पसार।
चार वरण वहाँ हैं नाहीं,
नाहीं कुल व्यवहार॥

नौ छः चौदह विद्या नाहीं,
नहिं वहाँ वेद विचार ।
जप तप संजम तीरथ नाहीं,
नाहीं नेम आचार ॥
पाँच तत्व नहिं उत्पति भइलैं,
सो परलय के पार ।
तीन देव ना तैंतिस कोटी,
नाहीं दसों अवतार ॥ 2 ॥
सोलह संख के आगे होई,
समरथ का दरबार ।
सेत सिंघासन आसन बैठे,
जहाँ सबद झनकार ॥ 4 ॥
पुरुष रूप कहा बरनों महिमा,
तिन गति अपरम्पार ।
कोटिभानु की सोभा जिन्हके,
इक इक रोम उजार ॥ 5 ॥
छर अच्छर दूनों से न्यारा,
सोई नाम हमार ।
सार शब्द को लेइ के आयो,
मिरतू लोक मञ्झार ॥
चार गुरु मिलि थापल हो,
जग केहैं कड़िहार ।

उनकर बहियां पकरि रही हो,
हँसा उतरौ पार ॥
जम्बूदीप के तुम सब हँसा,
गहि लो सबद हमार ।
दास कबीरा अव की दीहल,
निर्गुन कै टकसार ॥

यह कबीर का कथन है कि वह अनन्त है। शब्द और प्रकाश का भण्डार है। मैं तो कहूंगा कि वह शब्द और प्रकाश से भी परे है। जो वस्तु शब्द को सुनती है, हमारे अन्तर प्रकाश को देखती है, वह क्या है? उनका कोई अन्त नहीं पाता। वह कहते हैं कि लोगों को जीवन में क्या करना है? जीवन बिताने के लिए दाता दयाल (महर्षि शिव) के कथन के अनुसार शुद्ध तत्व विचार के सहारे अपने जीवन को गुजारना है। अपने-अपने मण्डल में रहते हुए, सारी दुनियाँ के खब्त को लेने की कोई आवश्यकता नहीं। जितनी-जितनी बुद्धि किसी को कुदरत ने दी है अपनी-अपनी करनी के अनुसार चलते हुए इस जीवन की यात्रा को खुशी, बेफिक्री से व्यतीत करते हुए उस एक मालिक को जो अनन्त है, अकाल पुरुष है, आधार रक्खो। आज शब्द था—

गुरु मध्य आदि अनन्त अद्भुत अमल अगम अगोचरम् ।

अब गुरु कौन हुआ? गुरु है शुद्ध तत्व विचार। क्या वह होशियारपुर या व्यास या किसी अन्य जगह रहता है? नहीं! वह तुम्हारे अन्तर में रहता है। वह गुरु है तुम्हारा शुद्ध तत्व रूपी गुरु। तुम्हारी अपनी ही चेतनता है। कबीर ने इस संसार में चार गुरु बताये हैं। हिन्दू शास्त्रों में भी चार गुरु वर्णन किये हैं—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः !
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुये नमः !!

जो गुरु ब्रह्मा का भाव है और गुरु विष्णु का स्वरूप है वह मैंने पहिले सत्संगों में वर्णन कर दिया है। गुरु महेश्वर का जो भाव है वह भी मैं पहिले कह चुका हूँ। गुरु पारब्रह्म का जो शब्द है उसकी व्याख्या मैंने इन चार सत्संगों में की है। अब मैं सोचता हूँ कि तुमने जो कुछ व्याख्या की है क्या यह ठीक है? मेरी अपनी सन्तुष्टि के लिए ठीक है। निज अनुभव के आधार पर जो मैंने समझा वह कहा। कबीर का क्या भाव है? तथा दाता दयाल (महर्षि शिव) का क्या भाव है? मैं नहीं जानता। कई बार सोचता हूँ कि यहाँ लाखों सन्त आये, लाखों पीर पैगम्बर आये, लाखों ऋषि आये, सब अपनी-अपनी बोलियाँ बोलकर चले गये। तूने अपनी बोलकर क्या कर लिया? यह मेरा अपना ही कर्म भोग था। अपने ही अन्तर एक भावना उठी। आप ही दौड़-धूप की। अपने ही आपको शान्ति मिली। यही दाता दयाल ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि मैंने किसी के लिए काम नहीं किया। कबीर ने अपने लिए ही काम किया। जिस तरह ऋषि मुनि, पीर पैगम्बर, अवतार अपना-अपना खेल संसार में खेल गये, इसी तरह मैं भी अपना खेल खेल गया। यह मोज थी! इन सत्संगों में मैंने अपना निज अनुभव कहा है। जो शुद्ध तत्व विचार मुझको अपने जीवन में प्राप्त हुआ, उसको वर्णन किया हैं। दावा नहीं करता। जिनकी बुद्धि है, जो सोच समझ रखते हैं, वह यदि मेरे इन विचारों को पढ़ेंगे उनके संशय भ्रम दूर होंगे। उनके अपने शारीरिक जीवन, मानसिक जीवन, आत्मिक जीवन तथा मालिक के साक्षात्कार का मार्ग मिल जायगा। मिल जायगा या नहीं यह दावा नहीं करता। यह मौज थी। यदि मेरे कर्म थे तो वह भी मौज थी। जो कुछ है यह उस मालिक की गति का खेल है। हम सब इसी चक्र में आये हुए हैं। मैंने गुरु के रूप को इसलिए प्रगट किया है कि मेरे जैसे हजारों लाखों दीवाने इस गुरु मत में आकर दौड़े भागे फिरते हैं। गुरु की खोज करते हैं। गुरु नाम है शुद्ध तत्व विचार का।

यही दाता दयाल कहते हैं—

गुरु आदि मध्य अनन्त अद्भुत अमल अगम अगोचरम् !
विभु विरज पार अपार निर्गुन सगुन सत्य विशेशरम् !!

यह है गुरु की महिमा। वह चेतन की शक्ति है जिसके सिद्धान्त पर यह सृष्टि बनती है। किसी विचार के सिद्धान्त पर सृष्टि बनती है। यदि कुदरत ने ऊण्ट लम्बा बनाया तो उसको गर्दन भी लम्बी बना दी ताकि वह खा पा सके। यदि कुदरत ने सांप बनाया और उसके पाँव नहीं दिये तो उसके शरीर में हड्डियाँ ऐसी बना दीं कि वह पाँव का काम करती हैं। इसी प्रकार और भी जान लो। अतः यह सारा खेल किसी नियमानुसार है। गुरु हर जगह मौजूद है। वनस्पति में गुरु, स्थावर में गुरु, सूर्य, चन्द्रमा और सितारों में गुरु, मेरे अन्तर में गुरु, घर-घट का वह गुरु एक तत्व है जो सब में रहता है। इस समय सब लोग गुरु को मानव समझ कर जीवन भर अशान्त रहते हैं इसलिए मैंने यह काम किया है। वह विचार जो मुझको मिला मैंने उसको वर्णन किया है ताकि मनुष्य का जीवन सुख से बीत जाय। मेरा जीवन जिस ढंग से शान्तमय हुआ, जिस मार्ग पर चलने से मैंने इस जीवन में जो अनुभव किये वह बताये हैं ! आगे शब्द में आता है—

जिहि मित लखे नहिं गति लखे,
सो शुद्ध तत्व विचार है।
जो चरन कँवल की ओट आया,
भव से बेड़ा पार है॥

अब यदि एक व्यक्ति कोई बाबा फकीर को ही गुरु बना लेता है उसी को मत्थे टेकता है, क्या वह गुरु की गति को जान जायेगा? नहीं, जब तक कि उसके अपने अन्तर में पूर्ण रूप से विचार स्फुरित न हो। चूंकि मन चञ्चल है, ठहरता नहीं है। इसलिए जब तक, तन, मन, सुरत निरत स्थिर नहीं होती तब तक पूर्ण रूप से विचार पैदा नहीं होता। इसलिए साधन—सुमिरन, ध्यान और भजन उस

सच्चे विचार को प्राप्त करने का है। सुमिरन ध्यान भजन इष्ट पद नहीं हैं। यह उस अनुभव को, उस ज्ञान, उस विचार को प्राप्त करने का एक साधन है। हम लोग जीवन भर विचार को तो प्रकट करते नहीं मगर सुमिरन ध्यान और भजन में ही सारा जीवन व्यतीत कर देते हैं। परिणाम यह निकलता हैं कि मनुष्य को शान्ति नहीं मिलती। यही दाता दयाल अगली कड़ी में कहते हैं—

गुरु विष्णु मूरत, शिव की सूरत गुरु को ब्रह्मा जान तू।
गुरु ब्रह्म है पारब्रह्म है यह सोच समझ के मान तू॥

देखो! दाता दयाल ने भी कहा है कि गुरु ब्रह्मा भी है, गुरु विष्णु भी है, गुरु महेश्वर भी है और गुरु पारब्रह्म भी है। उसको सोच समझकर मान। मैंने इन सत्संगों में इन चारों गुरुओं के रूप अपनी बुद्धि के अनुसार बता दिये। जिस उद्देश्य को लेकर मैंने यह वर्णन किया है और जो इस पुस्तक को पढ़ेंगे वह यदि थोड़ी बहुत समझ रखते हैं उनको शारीरिक, मानसिक और आत्मिक जीवन व्यतीत कराने का ठीक रास्ता मिल जायगा और अपने घर जाने का भी संस्कार मिलेगा। केवल पुस्तक को पढ़ लेने से या सत्संग में बैठकर बात को समझ जाने से रहस्य या मुअम्मा हल हो जाता है मगर फिर करनी या अमल की आवश्यकता है।

एक जनम गुरु भक्ति कर, जनम दूसरे नाम।
जनम तीसरे मुक्ति पद, चौथे में निजधाम॥

सत्संग करने से बुद्धि निश्चयात्मक हो जाती है या एक विश्वास बैठ जाता है। इसका नाम है एक जन्म की गुरु भक्ति! यदि जीवनभर इसी धुन में पड़े रहोगे कि सत्संग! सत्संग! तो काम नहीं बनेगा। सत्संग से जीव को रास्ता मिल जाता है। फिर उस पर क्रियात्मक होना पड़ता है या उस पर अमल करना पड़ता है। अमल करने का नाम है नाम जपना। उस अमल करने से जो तुमको सुख और शान्ति, अचिन्तपना (बेफिक्री) बेगमी आयेगी, उसका

नाम है मुक्ति पद। यह तीन वस्तुयें तो मुझ प्राप्त हैं। जो अन्तिम निजधाम है उसका मुझको अनुभव है मगर अभी निजधाम में स्थायी वासा नहीं हुआ। जब साधन में चला जाता हूँ तो अवश्य उस अवस्था में पहुँच जाता हूँ जिसका संकेत कबीर ने अपने निम्न शब्द में किया है—

दूर गवन तरो हँसा हो, घर अगम अपार।
नहिं कहाँ काया नहिं वहाँ माया,
नहिं वहाँ त्रिगुन पसार।

जब साधन करता हूँ तब वह अवस्था आती है, मगर अभी होश है। जब तक होश है मैं जीवन कैसे व्यतीत करता हूँ ?

गुरु ब्रह्मा को साथ रखता हूँ। गुरु विष्णु को साथ रखता हूँ। गुरु ब्रह्म को साथ रखता हूँ। गुरु ब्रह्मा को साथ रखने से यह अभिप्राय है कि अपने संकल्प को ठीक रखता हूँ— **'शिव संकल्पमस्तु'।** विश्वास रखता हूँ। आशावादी (Optimistic) रहता हूँ। यह गुरु विष्णु है। शिव संकल्प में रहता हुआ, विश्वास रखता हुआ भी इन सकल्पों या विचारों में फंसता नहीं। उनको प्रधानता नहीं देता। उनमें न फँसना ही गुरु महेश्वर हैं। प्रकाश और शब्द का साधन करता हूँ। इस प्रकार से जीवन व्यतीत करता रहता हूँ। आगे मौज जाने। यही दाता दयाल कहते हैं। अन्तिम कड़ी है—

कर गुरु की संगत रात-दिन, नर जन्म अपना सुधार ले !
दे फेंक माया बोझ सिर से, जम का भार न शीश ले !!

इस प्रकार जीवन बिताना ही 24 घण्टे गुरु की संगत करना है। संकल्प शुभ रखना, विश्वास रखना, आशावादी रहना और अपनी आशाओं में न फँसना तथा पारब्रह्म प्रकाश या शब्द का साधन करना ही चौबीस घण्टे गुरु का साथ रखना है। न तो हर समय मनुष्य शब्द में रह सकता है न प्रकाश में और न हर समय संकल्प में रह सकता है। इस ढंग से जीवन व्यतीत करने का नाम मैं गुरु को साथ रखना समझता हूँ।

मन में रहते हुए हमेशा यह ख्याल रक्खो कि बुरी बात नहीं सोचनी। शुभ संकल्प रक्खो। यह भी गुरु को ही हर समय साथ रखना है। आशावादी रहना भो गुरु को साथ रखना है। उसमें न फँसना, अपने रूप को अलग समझना यह भी गुरु को साथ रखता है। प्रकाश में जाना शब्द को सुनना भी गुरु को साथ रखना है। यह है जो मैंने समझा है। अज्ञानो लोग यह समझते हैं कि हर समय बाबा फकोर को मूरति तुम्हारे सामने रहेगो, हर समय सुमिरन करते रहोगे, हर समय प्रकाश में रहोगे। यह क्रियात्मक रूप से मेरे अनुभव में नहीं आया। किसी और के अनुभव का मुझे पता नहीं। यह है गुरु मत यही दाता दयाल लिखते हैं कि गुरु को 24 घण्टे अपने साथ रक्खो और माया का बोझ उतार दो। माया में क्या होता है? मन विक्षप करता है, चिन्ता फिक्र करता है शोक करता है मगर ऊपर बताये मार्ग पर जीवन व्यतीत करने से मनुष्य का जीवन सुख से व्यतीत हो जाता है और मन की जो अशान्ति, दुविधा, संशय भ्रम हैं, वह समाप्त हो जाते हैं। दुनियां बाबली होकर जीवनभर किसी रूप के पीछे पड़ी रहती है। इसमें सहायता करने वाला शुद्ध तत्त्व विचार है। यह मेरा अपना भाव है। यह है असली गुरु। इससे आदमो की दौड़ धूप समाप्त हो जाती है। जहाँ-जहाँ तुम्हारा मन जाता है वहाँ-वहाँ शिव संकल्प वाले और आशावादो बनो। यही गुरु मत है। जीव अवस्था में अथवा मन की अवस्था में अच्छे विचार रक्खो। विश्वास रक्खो कि असली घर हमारा यहां नहीं है। यह तीन वस्तुयें रखते हुए विश्वास रक्खो कि हम यहाँ के वासी नहीं हैं। तो जो कुछ यहां करोगे उसका कोई प्रभाव मस्तिष्क पर नहीं आयेगा। इसका नाम है गुरु महेश्वर। जब सुबह शाम समय मिले तब शब्द और प्रकाश को पकड़ो। कितना सरल मार्ग है? यह विश्वास कर लो कि तुम्हारा घर यहाँ नहीं है। यदि यह समझकर तुम शिव संकल्प रक्खो तो गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु और महेश्वर सब साथ हो जायें मगर दुनियाँ सुगम बात को समझना नहीं चाहती।

लाख कोस का पन्थ था, पल में दिया चुकाय '।

परिपूरक

हम जो काम करते हैं, या किसी वस्तु की उत्पत्ति करते हैं तो बुद्धि विवेक, ज्ञान और समझ के सहारे करते हैं। तभी हमको इस संसार में सुख मिल सकता है। वह ज्ञान जिससे हम संसार में सुखी रह सकते हैं वह गुरु ब्रह्मा की शरण है चाहे वह ज्ञान संसार का है चाहे वह सन्तान उत्पन्न का है। ऐसे सच्चे ज्ञान और विवेक के लिये पथ-प्रदर्शन वह कर सकता है जो कानून कुदरत को जानता है जिसकी सुरत मन और शरीर से ऊपर जाकर प्रकाशमय, शब्दमय होती है। अर्थात् ब्रह्म हुई है, ब्रह्म में रहती है, इसके लिए गुरु आज्ञा मानना और उसके भाव का पालन करना चाहिए।

गुरु ब्रह्मा के कारण जो तुम विचार रखते हो उसमें दृढ़ विश्वास रखना ही गुरु विष्णु है। जो विचार तुमने लिया है जो बाना तुमने पहिना है, जो कार्य तुमने आरम्भ किया है, पहिले गुरु ब्रह्मा की सहायता लो। फिर उस कार्य पर दृढ़ हो जाओ। दुनियाँ की जितनी सफलता है इस दृढ़ विश्वास के कारण से है अर्थात् गुरु विष्णु के कारण हैं। गुरु विष्णु के बिना अशान्ति और भ्रान्ति आ जायगी। यह मानसिक विष्णु है। शारीरिक विष्णु पाचन शक्ति है। जठराग्नि इसमें रहती है। जिसकी पाचन क्रिया खराब हो गई उसकी दुनियां बिगड़ गई। इसके लिए खान-पान पर **(Control)** रक्खो। स्वाद के लिए अधिक न खाओ।

गुरु विष्णु के कारण मनुष्य जीवन का आनन्द या स्वाद भी ले लेता है। फिर जब उस साँसारिक दशा के विनाश का समय आता है जैसे घाटा पड़ गया अथवा कोई और आपदा आ गई तो फिर गुरु महेश्वर के कारण उसको शान्ति रहती है। त्रिगुणात्मक जगत में परिवर्तन करने के कारण जो सुख-दुःख महसूस होना था वह उसकी ओर से अथवा उसके प्रवाह से बचा रहता है।

फिर शान्ति (Peace of mind) के लिए वह प्रकाश में चला जाता है। अपनी सुरत को पारब्रह्म में ले जाता है और गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु गुरु महेश्वर का साक्षी बनकर रहने से अडोल तथा अचिन्त हो रहता है। तन मन और सुरत स्थिर होकर अपने आप में या अपने रूप में ठहरने से परम शान्ति प्राप्त हो रहती है।

परिपूरक नं. 2

(अलीगढ़ 6-2-70)

मैंने जो कहा और लिखा वह अमली जीवन के अनुभव पर आधारित है। गुरु बनकर देख लिता और शिष्य बनकर देख लिया। चार गुरु जो शास्त्रों में बताये हैं अर्थात्—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः !
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मे श्री गुरुदेवे नमः !!

इनका अनुभव कर लिया। बाहर का गुरु चूंकि सृष्टि की रचना का ज्ञान देता है और स्थिति और प्रलय का अनुभव बताता है और साथ ही अपने घर जाने के लिए पारब्रह्मा का भेद देता है इसलिए दुनियाँ के लोग साधारणतया बाह्य गुरु को ही ब्रह्मा, बिष्णु, महेश्वर और पारब्रह्म समझकर पूजते हैं। यह गलत है। बाहर का गुरु जो समझ विवेक तथा ज्ञान उत्पत्ति स्थिति और प्रलय के बारे में देता है तथा अपने घर जाने का मार्ग बताता है उस मार्ग पर चलने से मनुष्य का कल्याण हो सकता है न कि केवल उसको ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और पारब्रह्म समझकर उसकी पूजा करने से। लोग गुरु पशु हो चुके हैं। अपने अज्ञान से लुट चुके हैं। कोई भी सत्यता को प्रगट नहीं करता। हर जगह लूट का धन्धा है। अज्ञानी जीव बाहर के गुरु को ही पूजते-पूजते मर गये। आशा करता हूँ लोग गुरु के रूप को समझकर जीवन बनायेंगे।

—फकीर

!! सबको शान्ति !!